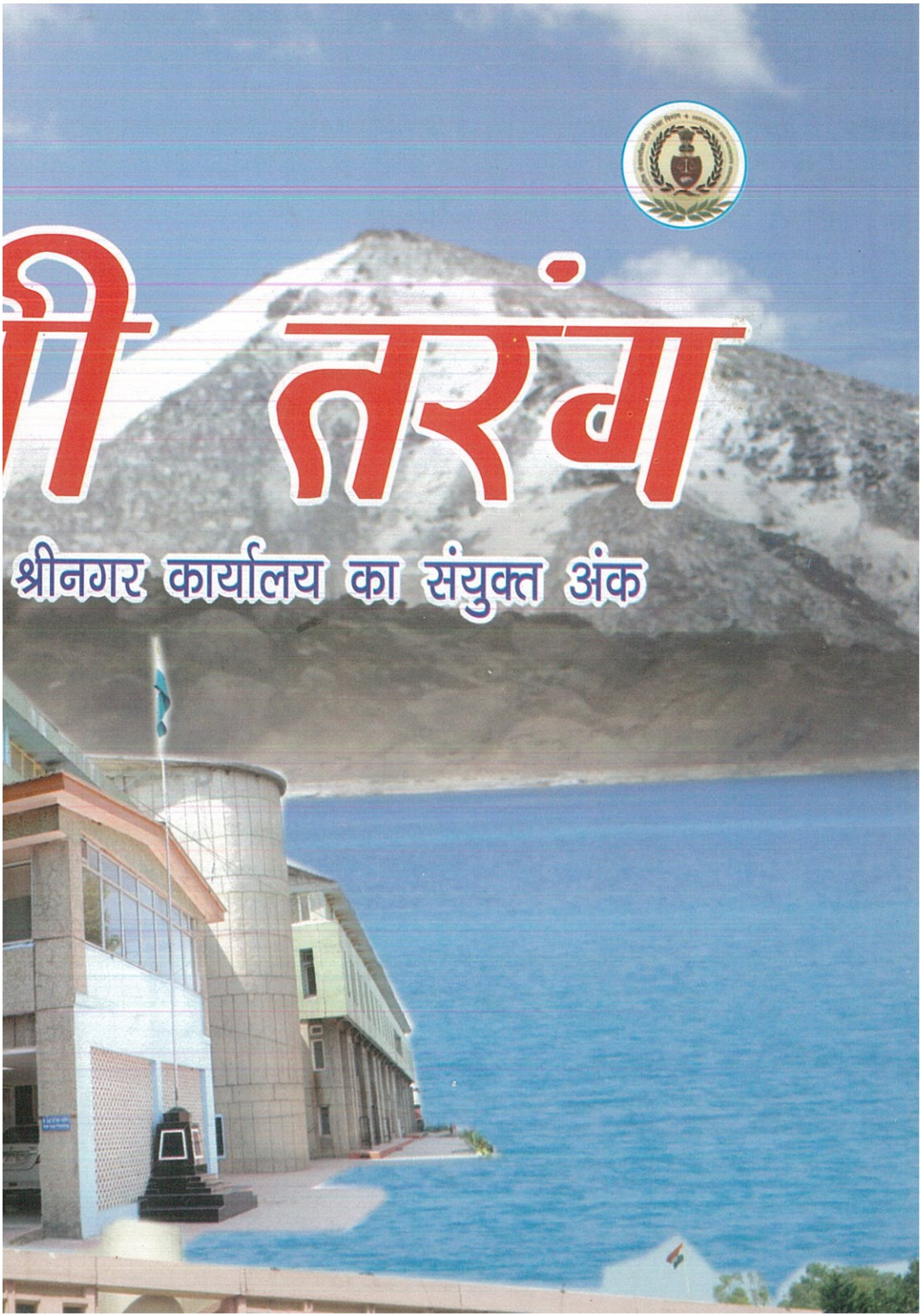

ी तरंग
श्रीनगर कार्यालय का संयुक्त अंक

ार्यालयीन पत्रिका तवी तरंग के 17वे अंक का विमोचन एवं हिन्दी दिवस 2015 की झलकियाँ

















कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका

तवी तरंग

जम्मू व श्रीनगर कार्यालय का संयुक्त अंक

अंक	:	**अठारहवां (2016)**
प्रकाशक	:	महालेखाकार जम्मू व कश्मीर, जम्मू फोन : 0191–2581290 फैक्स : 0191–2582065
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रक	:	जंडियाल प्रिन्टिग प्रैस, मोहिन्द्र नगर, जम्मू
फोटो	:	आर0 के0 स्टूडियो तालाब तिल्लो, जम्मू
मुख्य पृष्ठ	:	श्रीनगर एवं जम्मू कार्यालयों के साथ पोंगयागं झील, लेह
पिछला पृष्ठ	:	1. श्री माता वैष्णों देवी का भव्य भवन 2. शांति स्तूप, लेह 3. दरगाह हज़रतबल, श्रीनगर
संपर्क सूत्र	:	हिन्दी कक्ष (लेखा व हकदारी) कार्यालय महालेखाकार जम्मू व कश्मीर, शक्ति नगर, जम्मू–180001

पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं सम्पादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

सम्पादक

तवी तरंग परिवार

स्वत्वाधिकार	:	महालेखाकार, (ले. व. हक.) जम्मू व कश्मीर, जम्मू
मुख्य संरक्षक		श्री के सुब्रह्मण्यम महालेखाकार जम्मू व कश्मीर
संरक्षक	:	श्री पी.सी.एस. नेगी , उप महालेखाकार

संपादक मण्डल

मुख्य संपादक	:	श्रीमती मीना धर रैना	(व0 ले0 अधि0)
संपादक		श्रीमती प्रोफिल्ला मिसरी	(व0 ले0 प0 अधि0)
	:	श्री कृष्ण लाल चौधरी	(व0 ले0 अधि0)
उप सम्पादक	:	श्रीमती दर्शना भारती	(ले0 अधि0)
प्रबंध सम्पादक	:	श्री रवि कुमार शर्मा	(ले0 अधि0)
	:	श्री भजन सिंह	(स0 ले0 प0 अधि0)

सदस्यगण

1.	श्रीमती वीणा शर्मा	(स0 ले0 अधि0)
2.	श्री रमेश चन्द्र	(स0 ले0 अधि0)
3.	श्री नंदीप बख्शी	(स0 ले0 प0 अधि0)
4.	श्री सुनील कुमार	(क0 हि0 अनु0)
5.	श्री फूल सिंह	(क0 हि0 अनु0)
6.	श्री ओम प्रकाश डोई	(क0 हि0 अनु0)

कविता / कहानियाँ

क्र.	शीर्षक	रचानकार नाम	पदनाम
1.	सदेश		
2.	सम्पादकीय	मीना धर रैना	व.ले. अधि.
3.	वो विश्वगुरु कहलाऐगा	वीणा शर्मा	स.ले. अधि.
4.	हम	सन्दीप चौरसिया	लेखा परी.
5.	नेता जी का मर्ज	राजकुमार साहिल	ले. अधि.
6.	चांद खो गया	बिमला गुप्ता	व ले. परी.
7.	इकलौता बेटा विदेश में	अब्दुल मजीद राथर	उप महालेखकार
8.	प्रदूषण का ज़हर	राज कुमार साहिल	ले. अधि.
9.	नंदी गांव	मीना धर रैना	व.लेखा अधि.
10.	आनलाईन होगी शादी	राहुल कुमार	लेखा परीक्षक
11.	मैं नहीं बदली	सुरिन्दर कौर	स.ले.प.अधि.
12.	ऐ हिन्दी मुझे गर्व है	ओम प्रकाश चौधरी	स.ले.प.अधि.
13.	चलते रहो	रमेश कौल	स.ले.प.अधि.
14.	मेरा साथ निभा दे	वीना हप्पा	स. ले. प. अधि.
15.	सपनों का महत्व	दर्शना देवी	ले. अधि.
16.	वरदान	रतन लाल मान	व. ले.परी.
17.	जिन्दगी	सुनील कुमार	हिन्दी अनु.
18.	आस	तारो देवी	सेवानिवृत व. लेखा
19.	बचना मेरे दोस्तो	आशा वातल	व. लेखा.
20.	फोटो गैल्री		
21.	क्रोध बने अवरोध	रेनू अम्बारदार	व लेखा.
22.	गज़ल	सुशील सराफ	स.ले.प. अधि.
23.	तुलना का चक्रव्यूह	पुष्पा तिक्कू	सुपरवाईजर
24.	झूठी शान	संजीव वर्मा	स.ले.प. अधि.
25.	चंद शेर	सुनीता सरॉफ	स.ले.प.अधि.
26.	नज़म	सुनीता सरॉफ	स.ले.प.अधि.
27.	राष्ट्र निर्माण में हिन्दी का योदान	कुन्दन कुमार	लेखा परी.
28.	चटपटी चिट्ठी	रमैश कौल	स.ले.प अधि.
29.	समाज में नारी की स्थिति	मनु अनेजा	लेखा परी.
30.	मैं लौट आया	दर्शना भारती	लेखा अधि.
31.	नारी सशक्तीकरण	इंद्रराज मीना	लेख परी.
32.	आज के दौर में मीडिया का योगदान	पंकज कुमार	लेखा परी.
33.	टाईम पास	रवि कुमार शर्मा	लेखा अधि.
34.	उजालों से अब डर लगने लगने लगा है	दर्शना भारती	लेखा अधि.
35.	आपके पत्र		
36.	कार्यालय महालेखाकार		
37.	सेवानिवृति	सुनील कुमार	हिन्दी अनु.
38.	देहावसान		
39.	लेखा परीक्षा प्रतिवेदन के पन्नों से...	फूल सिंह	क.हि. अनु.



मुख्य संरक्षक की कलम से...

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हिन्दी के विकास एवं हिन्दी के सहज प्रयोग के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो समूचे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है।

कार्यालय में रचनात्मक वातावरण तैयार करने तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति निष्ठा जगाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उसी पथ पर अग्रसर रहते हुए कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' कार्यालय कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति के लिए मंच के रूप में कार्य कर रही है। पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारी और कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि 'तवी तरंग' का यह अंक भी गत अंक की भांति ज्ञानवर्धक एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा विभागीय कार्यकलापों में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकशन एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

के. सुब्रमण्यम
महालेखाकार (ले व ह क)
जम्मू व कश्मीर

सत्यमेव जयते

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं पत्रिका से जुड़े रचनाकारों, पाठकों एवं सम्पादन मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को प्रकाशित करवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पत्रिकाएँ विचारों के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम है इसलिए विभागीय पत्रिकाओं का योगदान राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अत्यंत सराहनीय है। राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देना हम सब का संवैधानिक कर्तव्य भी है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी पत्रिका का यह अंक कार्यालय के कर्मियों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा। हिन्दी दुनिया की उन्नत भाषाओं में से एक है। हिन्दी में कार्य करने में हमें गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक के प्रकाशन पर सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

शीला जोग

श्रीमती शीला जोग
प्रधान निदेशक (क्षे.प्र.स.)
जम्मू व कश्मीर

सत्यमेव जयते



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह हमारे लिए गौरव की बात है। किसी भी देश की सांस्कृतिक गरिमा और गौरवशाली इतिहास को जानने का माध्यम उस देश की राष्ट्रभाषा होती है। कार्यालय द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने तथा कार्यालय में कार्यरत कर्मियों की सृजनात्मक प्रतिभा को सशक्त मंच प्रदान करने के साथ कार्यालयीन गतिविधियों में हिन्दी कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक एवं सफल कदम है। मैं इस अवसर पर पत्रिका परिवार के सभी रचनाकारों, संपादकों एवं अन्य सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ जिनके अथक प्रयासों में इस पत्रिका के 18वें अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

पत्रिका के वर्तमान अंक तथा भविष्य में भी इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतू मेरी शुभकामनाएं।

हौवैदा अब्बास
महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
जम्मू व कश्मीर

सत्यमेव जयते



संरक्षक की कलम से.....

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक को आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए मुझे गौरव एवं हर्ष की अनुभूति हो रही है। संपादक मंडल एवं अन्य सदस्यगणों का पत्रिका के प्रकाशन में योगदान सराहनीय है। पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से प्रयत्न किया गया है कि सभी भाषा–भाषियों को हिन्दी में अभिव्यक्ति का अवसर मिले एवं कार्यालयीन कार्यों को हिन्दी में करने के प्रयत्न को बढ़ावा दिया जा सके। इससे न केवल कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय कार्यकलापों की जानकारी हिन्दी, में उपलब्ध होती है बल्कि यह कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित भी करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ अपने बहुउद्देशीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा उज्जवल भविष्य की निरन्तर कामना करते हुए।

पी०सी०एस० नेगी
उपमहालेखाकार (प्रशासन)
जम्मू व कश्मीर



सत्यमेव जयते



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका, 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने तथा कार्यालय का कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित करने में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अलावा कार्यालय के कर्मियों को हिन्दी में मौलिक लेखन को भी बढ़ाया मिलता है। पत्रिका के सभी रचनाकारों, संपादकों का सहयोग सराहनीय है तथा भविष्य में भी इस सहयोग को बनाए रखने की आशा करता हूँ।

पत्रिका को सफल प्रकाशन तथा उज्जवल भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

स्वांग थारचिन
वरि० उप महालेखाकार (प्रशासन)
जम्मू व कश्मीर

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका, 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विभागीय पत्रिकाओं का राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। यह पत्रिकाएं न केवल कर्मियों को कार्यालयीन कार्य में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए उत्साहित करती हैं बल्कि उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को भी दर्शाती है। सरल एवं सहज भाषा होने के कारण हिन्दी में कार्य करना बहुत आसान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक कर्मियों की रचनात्मक सोच के साथ–साथ राजभाषा के प्रसार में भी सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतू मेरी शुभकानाएं।

डॉ. दीन दयाल वर्मा
उप महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र)
जम्मू व कश्मीर



संदेश

इस कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'तवी तरंग' का 18वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। हमारा यह निरन्तर प्रयास रहा है कि इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण राजभाषा के प्रति अपना लगाव दिखा सकें तथा इसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बना सकें।

आज हिन्दी संसार की महत्वपूर्ण भाषा के रूप में उभरकर सामने आई है। दुनिया की सबसे वैज्ञानिक भाषा होने के कारण इसकी शक्ति असीमित है। साहित्यिक जगत में इतनी विरल उपलब्धियों के बावजूद हिंदी राजभाषा के रूप में अभी तक अपना वांछित स्थान नहीं प्राप्त कर सकी है। इस दिशा में अभी बहुत कुछ करना शेष है। इसलिए विभागीय पत्रिकाओं की भागीदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पत्रिका से जुड़े रचनाकारों, पाठकों एवं सम्पादन मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका 'तवी तरंग' प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर रहते हुए नए–नए परिदृश्यों से अवगत करवाएगी।

शुभकामनाओं सहित।

अब्दुल मज़ीद राथर
उपमहालेखाकार (पैंशन)
जम्मू व कश्मीर

सत्यमेव जयते



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि यह कार्यालय हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' का 18वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े रचनाकारें, पाठकों एवं सम्पादन मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

कार्यालय के दैनिक कार्यों हेतु इन विभागीय पत्रिकाओं का योगदान राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अत्यंत सराहनीय है। इसके अतिरिक्त विविध रचनाओं के माध्यम से स्वस्थ मनोरंजन के अलावा पाठकों के सामाजिक एवं व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि होती हैं इस प्रकार के प्रयासों से ही राजभाषा हिन्दी के प्रति कर्मचारियों के मन में निष्ठा तथा लगन का भाव उत्पन्न होगा।

अतः मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका 'तवी तरंग' का 18वां अंक आप की कसौटी पर खरा उतरेगा। इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

आर.के पण्डिता
उपमहालेखाकार (लेखा)
जम्मू व कश्मीर

सत्यमेव जयते



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय में हिन्दी में कार्य करने के अनुकूल वातावरण तैयार होता है तथा कार्यालय के कर्मियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने का अवसर भी मिलता है। पत्रिका परिवार के सभी रचनाकारों, संपादकों तथा पाठकों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वी० के० बख्शी
उप महालेखाकार (आ० एवं राजस्व)
जम्मू व कश्मीर



सम्पादकीय

तवी तरंग के अठारहवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में सभी भाग लेने वाले रचनाकार कवि/कवित्रियां बधाई के पात्र हैं। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मानव अपने मन के भाव दूसरों तक पहुँचाता है। आशा करती हूँ कि इस पत्रिका की हर रचना पाठक के मन को मोह लेगी तथा एक संदेश पहुँचाने में सफल होगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन में निर्देश एवं मार्ग दर्शन देने के लिए मैं सभी अधिकारी गण विशेष तौर पर महालेखाकार (लेखा एवं हक) का आभार प्रकट करती हूँ। सम्पादक मण्डल का आभार प्रकट करते हुए मैं उन सभी रचनाशिल्पियों सुधी पाठकों तथा उन सभी कर्मियों को बधाई देती हूँ जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस पत्रिका के साथ जुड़े हुए हैं। आशा करती हूँ कि आप सब आगे भी इसी प्रकार योगदान देते रहेंगे ताकि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

मीना धर रैना
प्रधान सम्पादक

क्षे. प्र. संस्थान जम्मू में भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक का निरीक्षण दौरा









श्रीनगर कार्यालय में भारत के उप-नियंत्रक महालेखा परीक्षक का निरीक्षण दौरा









वर्ष 2016 में आयोजित हिन्दी दिवस की झलकियाँ


















वो विश्वगुरू कहलाऐगा

वीणा शर्मा
स.ले अधिकारी

इतने प्यार से मुझे बुलाया,
देश भक्त हूँ, मैं भी चला आया,

पर पूछता हूँ आप से
क्या आज में स्वतन्त्र हूँ?
70वी वर्षगांठ पर भी
आज मैं परतन्त्र हूँ।

पर्तन्त्र हूँ दिमाग से, विचार से
पर्तन्त्र हूँ मैं लोभ से, आक्रोश से।

बोस कुर्बानी दे गए–2
भगत भी सूली चढ़ गए
सुख देव गुरू ने अनुकरण किया
और भारत को स्वतन्त्र किया।

कहाँ थे याद आए वे–2
जब टुकड़े किए देश के
कुर्सी का लोभ आ गया
जो बन कर काल छा गया।

फिर बोया बीज द्वेश का–2
और घर बना कलेश का
हिन्दु मुस्लिम बंट गया
धर्म को आगे कर गया।

चरित्र का हनन हुआ–2
फिर गोलियों का चलन हुआ



निर्दोष को मारकर
भविष्य वीर बन चला।

इंसानियत है मर चुकी–2
सभ्यता सूली चढ़ चुकी
क्या मुंह उन्हें दिखाओग–2
शर्मिंदा होके जाओगे।

समय अभी है आज भी
तुम पोंछ लो पिछली तख्तियां
सुधार लो समाज को,
मिटा के अपनी गल्तियां।

यूं रोक लो अपने स्वार्थ को–2
सिर्फ देश की ही बात हो,
पीढ़ियों का साथ हो।
भारत का पूर्ण विकास हो।।

भारत का पुर्न निर्माण हो–2
सभ्यता इसी की जान हो,
इंसानियत भरपूर हो,
और विश्व में मशहूर हो।

ये पाक, चीन छोड़ दो–2
ब्रह्मांड राग गाऐगा
हर जन्म मेरा भारत में हो
वो विश्व गुरू कहलाऐगा–2

जय हिन्द, जय भारत



हम

सन्दीप चौरसिया
(लेखा परीक्षक)

कभी फुरसत में मिलो तो बतायेंगे हम
ज़िन्दगी जी कैसे जाती है ये सिखायेंगे हम।

जज़्बे को जगाया कैसे जाता है ये दिखलाएंगे हम
उस रास्ते पर चलना सिखायेंगे हम।

कहीं ऐसा न हो, जाते–जाते खुद सो जायें हम
कठिन है रास्ता, फिर भी चलते जायेंगे हम।

ज़िन्दगी की दास्ताँ क्या है, ये लिखायेंगे हम
जीवन का सच क्या है, ये बतायेंगे हम।

आपस के गिले शिकवों को मिलकर मिटायेंगे हम
जिसे खुशी न मिली हो, उसे खुशी दिलायेंगे हम।

रीति–रिवाज सोचा न होगा वह भी कर जायेंगे हम
अपनी दौलत यहीं छोड़ जायेंगे हम
हमारी किस्मत में क्या है, यह भी आज़मायेंगे हम।



नेता जी का मर्ज

राजकुमार साहिल
लेखा अधिकारी

ओं के चोंचले नेता ही जाने
तो बस इतना ही माने
मिल गया वही हकीकत है
न मिला वो अफसाने
रे प्रसिद्ध नेता राम प्यारे
दिन पड़ गये बिमार बेचारे
छोड़ी न कोई इलाज में कसर
दवा दारू का भी हुआ न असर
फूंक और हवन करवाये
ह-जगह पूजन भी करवाये
फिर भी नेता जी ठीक न हुये
दिन प्रतिदिन और गम्भीर हुए
टोटके जब बेकार हो गये
जी अस्पताल में भर्ती हो गये
वहां भी हालत न सुधरी
नब्ज़ तेज़ हुई, सांस भी उखड़ी
वें सूजी, पेट फूला
हुई झूलता झूला
अब चम्चों को समझ आया
नेता जी का मर्ज क्या है
आखिरकार यह भी तरीका
आजमाने में हर्ज क्या है
ताल के बेड, टेबल, कुर्सियां
इक्टठे किये, हाल में पहुंचाये
कर्मचारी और रोगी पब्लिक की जगह बिठाये
बनाई और माईक लगाया
को भी खूब सजाया।
फिर एक चम्मचा दौड़ा आया
नेता जी के कान में फुमफुमाया
नेता जी आप यहां पड़े हैं
विपक्षी अपनी ज़िद पर अड़े हैं
इसीलिए पार्टी ने जलसा किया है
आपको सारा जिम्मा दिया है
इतना सुनते ही नेता हरकत में आये
आंखें खोली और मंद-मंद मुस्काये
नेताजी ने हाथ से इशारा किया
चमचों ने फटाफट सहारा दिया
जैसे तैसे नेता जी को स्टेज पर पहुंचाया
माईक हाथ में दिया, हार पहनाया
पूरे दो घण्टे नेता ने भाषण दिया
कभी यह तो कभी वो आश्वासन दिया
भाषण करते ही नेता की तबीयत सुधर गई मगर
सुनने वाले रोगियों की तबीयत और बिगड़ गई।

चांद खो गया

बिमला गुप्ता
व.ले.प.

आएगी रात दीवाली की, और दीप जलेंगे घर-घर में
आएगी बारात सितारों की, पर चांद खो गया है।

जिसको सराहते थे, आंखों में हज़ारों में
वह गीत मेरे मन का, अब ख्वाब हो गया है।

हीरा समझा के जिसको, रखा बड़े जल से,
किसी और के गले का, वो हार हो गया है।

नन्हा सा पौधा जिसको, बड़े प्यार से था सींचा,
किसी और के चमन का वो फूल हो गया है।

हमने जिसे तराशा, मेहनत लगन, हुनर से
वह देश छोड़ अपना, परदेसी हो गया है।

अपना जिसे समझकर, हम इतनी दूर आए
इस पार छोड़ हमको, उस पार हो गया है।

उसने था जो भी बक्शा, बांधा था पोटली में
अब गांठ खुल गई तो, सब कुछ बिखर गया है।

अनगणित कविताएं भरी हुई कवि के अवचेतन में
कवि मौन क्यों हुआ है, क्या शब्द खो गया हैं।

कयों चांद खो गया है।



इकलौता बेटा विदेश में

अब्दुल मजीद राथर
उप महालेखाकार

एक बार, एक छोटे से गांव में शूबली नाम का व्यक्ति रहता था जो अपने गांव में 50 किलोमीटर दूर एक सरकारी कार्यालय में औसत दर्जे का कर्मचारी था। उसका छोटा सा परिवार था जिसमें उसकी पत्नी और एक लड़का जिसका नाम नादिम था। शूबली जब शाम को घर लौटा तो उसका चेहरा बड़ा उदास था। जब पत्नी ने कारण पूछा तो शूबली ने बताया उसका तबादला दूसरे कार्यालय में हो गया है जो उसके घर से 100 किलोमीटर से भी अधिक है अत: वो रोज़ शाम को घर नहीं लौट पायेगा। इस पर पत्नी ने शूबली को समझाया कि इसमें दु:खी होने वाली कोई बात नहीं है। अगर शूबली एक महीने में भी घर का चक्कर लगा ले तो ठीक है। बाकी वो सब कुछ संभाल लेगी। पत्नी के समझाने पर शूबली ने दूसरे कार्यालय में नौकरी पर जाना आरम्भ कर दिया और कार्यालय के पास ही एक कमरा ले लिया। अब शूबली हर महीने वेतन लेने के बाद अपने गांव आ जाता और एक दो दिन रहकर वापस लौट जाता।

कुछ समय के पश्चात ही शूबली की पत्नी शिकायत करने लगी कि नादिम पढ़ाई में बिलकुल मन नहीं लगा रहा है और सारा दिन गांव के आवारा लड़कों के साथ घूमता रहता है। जो चिन्ता वाली बात थी। अत: सलाह मशविरा करने के पश्चात इस नतीजे पर पहुंचे कि शूबली नादिम को अपने साथ ले जायेगा और वहां पर अच्छे स्कूल में दाखिल करवा देगा। यह सुनकर नादिम भी खुश हुआ और माता पिता को आश्वासन दिया कि वो भी शहर जाकर खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा और अपने माता पिता को निराश नहीं करेगा। शहर आकर नादिम ने वह कर दिखाया जैसा उसने कहा था।

नादिम ने पहले बी.ए फिर एम.ए अच्छे नंबरों के साथ पास की और तो और उसने के.ऐ.एस. भी पास कर लिया और सरकारी कार्यालय में अच्छी नौकरी भी पा ली। अब कमी किस बात की थीं। शूबली ने अपने इलाके की सुन्दर लड़की ढूंढकर उससे नादिम की शादी कर दी। उसी दौरान शूबली सरकारी नौकरी से रिटायर हो चुका था इसलिये वह अपने पेतृक गांव लौट जाना चाहता था। मगर नादिम की अपनी नौकरी थी और अच्छा खासा मकान भी खरीदा हुआ था। अत: नादिम ने गांव लौटने से मना कर दिया और अब शूबली अकेला ही गांव लौट आया। लेकिन नादिम अपने माता पिता को फोन करता रहता जब भी मौका मिलता वह गांव भी चक्कर लगा लेता। नादिम की शादी को दो साल बीते तो उनके घर सुन्दर बेटा पैदा हुआ जिसका नाम उन्होंने बड़े प्यार से मामून रखा।

मामून भी अपने पिता की तरह पढ़ाई में बहुत होशियार था। वह हर साल, हर क्लास में प्रथम ही आता नादिम भी अपने पुत्र की कामयाबी पर फूला न समाता और हर खुशी अपने माता पिता के साथ फोन पर बांटता। नादिम के माता पिता इस दुनिया से गुज़र गये तो अब नादिम का एक ही उद्देश्य था कि मामून को अच्छी शिक्षा दिलाये। नादिम की कोशिश के फल स्वरूप ही मामून ने मैडिकल कॉलेज में दाखिला ले लिया था। पहले एम.बी.बी.एस और फिर एम.डी की परीक्षा भी पास कर ली थी। अब मामून के सपने बहुत बड़े थे। इसी दौरान नादिम और उसकी पत्नी भी शूगर के मरीज़ हो चुके थे मगर उन सब बातों की परवाह किये बगैर मामून ने यह मन बना लिया कि वो देश के बाहर जाकर ही नौकरी करेगा और एक दिन अमेरिका चला गया और वहां पर नौकरी करने लगा। इतना ज़रूर था कि मामून हफ्ते में एक बार फोन ज़रूर कर लेता। नादिम ने कई बार मामून को फोन कर बताया कि उसकी मां ठीक नहीं है एक बार आकर मिल जाये मगर मामून हर बार कोई न कोई बहाना बना देता।

अब तो नादिम और उसकी पत्नी पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा था जब मामून ने फोन पर यह बताया कि उसने अमेरिका में ही एक अंग्रेज़ लड़की से शादी कर ली है जब कि नादिम और उसकी पत्नी चाहते थे कि मामून अपने देश लौट आये और अपने ही देश की किसी लड़की से शादी करे। मगर ऐसा हुआ नहीं जिसको नादिम की पत्नी सह न सकी और अन्तत: उसने

देह त्याग दी अब नादिम अकेला ही रह गया। उसका अपना कोई न था। मगर शहर के लोग उसे बहुत प्यार करते और कभी-कभी उसको मिलने आ जाते मगर फिर नादिम को अकेलापन महसूस होता रहता बस उसे इस बात का इन्तज़ार रहता कि कब मामून उसे फोन करे, जब फोन आता तो नादिम की खुशी का ठिकाना न रहता। नादिम चाहता कि वो अपने बेटे से घण्टों बात करे मगर मामून के पास न तो इतना समय होता और न ही उसे कोई दिलचस्पी। वो काम की व्यस्तता का बहाना बना देता। मामून ने भी अब फोन करना कम कर दिया था अब तो दो अढाई महीने में एक बार ही फोन करता। अकेलेपन का एहसास और शूगर की बीमारी नादिम को अन्दर से खोखला कर चुकी थी। नादिम की हालत दिन ब दिन खराब हो रही थी। मगर उसने मामून को कभी भी नहीं बताया। वो सोचता कि मामून को जब भी मौका मिलेगा वो उसे ज़रूर देखने आयेगा इसी उम्मीद को लिये आखिर नादिम भी चल बसा।

इस बार तो हद ही हो गई मामून ने जब फोन किया तो नादिम के इन्तकाल हुये एक सप्ताह से भी ज़्यादा वक्त गुज़र चुका था मामून को अफसोस तो हुआ मगर उसने उन पड़ोसियों और शहर के लोगों का शुक्रिया तक नहीं किया जिन्होंने उसके पिता के शव को अपने रिशतेदारों से ज़्यादा समझकर दफनाया था। नादिम का जनाज़ा उस धूमधाम से उठा था कि मानो वो कोई मामूली इन्सान न होकर कोई लीडर था। हर कोई उसके जनाज़े में शामिल था। लोग इसलिये भी ज़्यादा थे क्योंकि वे जानते थे कि नादिम का कोई नहीं है। जो विदेशी बेटा अपनी मां के इन्तकाल में हाज़िर नहीं हुआ तो अब क्या आयेगा। नादिम के साथ पूरे शहर की हमदर्दी इसलिये भी थी कि अकसर शहर के लोग नादिम को अकेले सिर झुकाये, झुकी नज़रें शहर में टहलते देखा था। नादिम को जब दफनाया जा रहा था तो पूरे शहर की भीड़ गम में डूबी थी। मगर उधर से एक सिर-फिरा राही गालिब की यह पंक्तियां गुनगनाता गुज़र रहा था।

रहिये अब ऐसी जगह चलकर
जहां कोई न हो।

हमसुखन कोई न हो और हम जुवां कोई न हो
बे दर ओ दिवार सा एक घर बनाना चाहिये
कोइ हमसाया न हो और पासवां कोई न हो
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तिमारदार
और अगर मर जाइये तो नवाखा कोई न हो।



प्रदूषण का ज़हर

राज कुमार साहिल
लेखा अधिकारी

बर्बाद कर चुके हैं जंगल इतने
फैल रहा प्रदूषण का ज़हर।।
ये सुनामी तूफां और जलजले।
बरसा रहा मौसम भी कहर।।
मीठा सूरमा पीपल की छांव।
याद आये पुराना वो गांव।।
प्रगति की राह चलते-चलते।
बन गया है जो इक शहर।।
हर कोई यहां पर है रोगी।



अगली सदी दुनियां क्या होगी।।
मौत कर रही है तांडव।
ज़िन्दगी गई है अब ठहर।।
छू रहा है तापमान भी शिखर
पिघल रहा है अब तो गलेशियर
समुन्द्र का रूप भविष्य क्या होगा
नाले बन चले हैं अब नहर
फेल रहा प्रदूषण का ज़हर
बरपा रहा मौसम भी कहर।।



नंदी गांव

मीना धर रैना
वरिष्ठ. लेखा अधिकारी

हिमालय की गोद में बसा अबोध बालक जैसा चन्द्रमा की शीतल तथा श्वेत चांदनी में नहलाया ऐसा।

यह मनोरम स्थल जहां देवता भी लालायित हैं आने पर, यह है नंदी गांव, शायद भोले बाबा का दिया नाम।

प्रकृति यहां अपने नग्न दर्शन कराने में व्यस्त है मदमाती पवन झूम–झूम कर नृत्य में मस्त है।

सुबह की उषा किरण इस गांव के मस्तक को चूमती है। वीणा तार की झंकार में स्वर बज रहे हैं।

यह पावन धरा झील को गोद में झुला रही हैं और झील के किनारे–किनारे उन युवतिओं की अल्हड़ गाने की गूंज उनके सुर से सुर मिलाकर कोयल की कूक दिलों के बंद दरवाज़ों पर दे रही दस्तक।

यह समां भर देता है निष्प्राणों में भी प्राण, मादकता भरा वातावरण है चारों ओर, कोमल रागिनी के संग गा रही है खुलकर जिंदगी।

झरनों का यौवन देखो उनके कल–कल स्वर से फूटे नदियां बह रही हैं निश्चल पर सीमाएं न छूटे। हरियाली भरा स्थल है वृक्ष हैं फल फूल भरे प्रकृति का हर अंश मोह और संकोच की कलिख दूर करे।

यहां बना शिव का मंदिर भोले बाबा की देन जहां पर आकर सब जीव आरती करे दिन रैन।

पहली बसंत का आगमन और शिवालय का मनोरम दृश्य निर्मल भावनाएं लकेर बालकों का दैवी नृत्य।

वृद्धाओं का लोकगान तथा आहुति के बीच ओम नमः शिवाय की गूंज यह सब कैलाशपति को आने पर करते हैं बाध्य।

सांझ की बेला में यज्ञ के अग्नि की ज्वाला साधना पंछी के पंख लगाकर पूजे अराध्य

हर बसंत की तरह कल फिर बसंत की बेला है पर सुबह यह बसंत कहां तरस रहा है आकाश स्तब्ध है चांद तारे भी सहमे हैं अश्रुपूर्ण आंखें हृदय विदीर्ण हैं

यहां सब निस्तब्ध है चालीस मानवों की अंतिम यात्रा यज्ञ के स्थान पर मानव शव जिनमें दो नवज़ात बालक करते थे स्तनपान मां की अभी पहचान नहीं तो धर्म का कैसा होगा भान।

आकाश स्तब्ध है चांद तारे स्तब्ध है प्रकृति भी सहमी है ना ही पक्षी की चहचहाट न ही झरने की झरझर है।

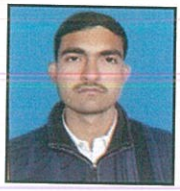
पेड़ पौधे चल अचल सब आतंकित हैं जन्मों की शांति पलभर में फुर्र हो गई है क्या मानव धर्म ही सबका धर्म नहीं है।

क्यों इतराते फिरते वो अपने आतंक पर यहां मारने में बड़े बहादुर हो क्या बन गये खुदा।

मैं तुमसे पूछती हूँ दम है तो किसी को दो ज़िंदगी नहीं दे सकते हो तो क्या है तुम्हारी बन्दगी भटक गये क्यों राह से क्यों बन गये हो दानव।

कुदरत के अपने नियम हैं क्यों करते हो हस्ताक्षेप, वह है वीरों का वीर महानों का महान पल में चाहे बनाए पल में सुनामी लाए।

क्यों उठाया तुमने यह बीड़ा और देने लगे सज़ा क्या सृष्टिकर्ता इतना है कमज़ोर, अभी समय है समझो और सुधर जाओ।



आनलाईन होगी शादी

राहुल कुमार
लेखा परीक्षक

आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
कॅम्पयूटर और बरॉडबैंड से
होगी आगे सारी शादी
पंडित हलवाई बराती,
उड़ेंगे अब सबके परखच्चे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।।
आनलाईन ही नज़र मिली थी
आनलाईन ही प्यार हुआ
आनलाईन ही बातों बातों में
प्यार का इज़हार हुआ
आनलाईन ही हम भले हैं
आनलाईन ही हो तुम अच्छे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
कुछ ज़्यादा ही चाहिए
बस डोंगल ही काफी होगा।
भूल जाओ सब लोगों को
ना करो उन्हें इक्टठे।
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
मां बाप के मिलने की
आगे ज़रूरत कम होगी
जनसंख्या बढ़ाने के लिए
बस कोपी करनी होगी
फिर चाहे जहां पेस्ट करो
उनके ही हो जायें बच्चे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
ये भी हो सकता है
वो तीन इंजेक्शन माता को
अब नहीं लग पायेंगे
हर बार डॉ. हार्ड डिस्क
अपग्रेड करते जायेंगे।
गर्भ में भी कन्नेक्ट रहे
वो सॉफटवेयर डाले जायेंगे
जानेंगे सब अंदर की बातें कि
कैसे अंदर बचे हैं बच्चे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
उस दुनिया में
न कोई मित्र होगा
न भावनाओं का मोल होगा
मार्केटिंग में होंगे सभी तब
बस विज्ञापन का ज़ोर होगा
4 फीट के छोटे घर में
अपनी दुनिया में हम अच्छे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
बच्चे कैसे होंगे
बच्चे होंगे हार्ड डिस्क संग
बस अपडेट करना होगा
बुद्धु बच्चा जी.बी का होगा
इंटेलीजेंट बच्चा टी.बी का होगा
भिखारी भी एम.बी में होंगे
गुगल होगा सबका ऐडरस
ऐडरस चिप उनके संग होगी
जाओ सबको कल्कि करो
हो जायेंगे सब इक्ट्ठे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
जो मातायें दूध पिलाती थी
वो नेट मुफ्त कर देगी
बाप परोटेक्शन देता था
वो एंटीवायरस देगा
पर हैंग हो गये कभी अगर
और बैठ गई मैमोरी
फिर मां–बाप को कुछ नहीं पता
कि मेरे हैं या तेरे बच्चे
आनलाईन ही होगी शादी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।

मैं नहीं बदली



सुरिन्दर कौर
स.ले.प.अ.

हे मां,

मैं तेरी गुड़िया, कुछ बदल न पायी
अनजान खड़ी हूँ, तड़प रही हूँ
पर बदल न पायी

कोमल हूँ बस तुझे चाहती हूँ,
प्यार में तेरे, मैं झगड़ न पायी

तुझे मिलने की तड़प बढ़ी है,
समझाये सभी, मैं समझ न पायी
हे मां, मैं तेरी गुड़िया, कुछ बदल न पायी

घर बंटा तो तू भी बंटी
दिल भी बंटा, सांसें भी बंटी।

धड़कन मेरी जलती ही रही
मन में उलझन चलती ही रही
सब छूटा, सब टूटा
पर मैं बदल न पायी

है मां,
मैं तुझे ही चाहूं अपने से ज़्यादा
आंसू ही निकलते हैं क्यों ज़्यादा

सबने समझाया रोको इनको
हम तो हैं, देखो ना हमको

पर जो सांसें तुझसे हैं जुड़ी
उसको चाहकर भी बदल न पायी

हे मां, मैं तेरी गुड़िया
कुछ बदल न पायी

ऐ हिन्दी मुझे गर्व है



ओम प्रकाश चौधरी
स.ले.प.अ.

ऐ हिन्दी मुझे गर्व है कि मैं तुझे सुनता, लिखता और बोलता हूं।
अपने मन के प्रश्नों को तुझमें टटोलता हूं।
सब उत्तर मिलते हैं जब ग्रन्थों को खोलता हूं
कुछ कहते हैं कि तू खो रही है अपनी पहचान को
भूल है सब की, जो मान रहे हें इस अज्ञान को
तुझ से मधुर स्वर हैं सजते,
तुझ में हैं वेद बसते।
तू मेरे खून में रचती है, मां तू इस मिट्टी में बसती है।
हे हिन्दी मुझे गर्व
बारिश की छम–छम में है तेरा वास
डमरू की डम–डम में है तेरा वास।
पिता की फटकार में है तू,
मां के दुलार में है तू।
तू ही गंगा में डुबकी लगा रही,
तू ही हिमालय में मंत्रों को गुनगुना रही
पावन है तेरा सम्राज्य तू कश्मीर से
कन्याकुमारी तक लहरा रही
भाईचारे की प्रीती बढ़ा रही
ऐ हिन्दी मुझे गर्व है कि मैं तुझे
सुनता, लिखता और बोलता हूं।
अपने प्रश्नों को तुझमें टटोलता हूं।

चलते रहो

रमेश कौल
स.ले.प.अ.

चलते रहो, चलते रहो
सद्गुरू के बतलाये पथ पर अविराम चलो
पथ लगेगा दुर्गम, कोंटों भरा, पथरीला भी
बहुत कठिन अत्यन्त श्रमसाहय चढ़ान इसकी
पर बढ़ो हिम्मत से, उनका दिया हर शब्द गुनो
चलो, चलो, चलते रहो अविराम चलो।।

कुछ दूरी पर वृक्ष दिखेंगे हरे–घने
अभी नहीं रे! छोड़ विचार सुस्ताने के
स्वेद बहा निश्चय को निज लाठी कर लो
चलो, चलो, चलते रहो, अविराम चलो।।

आगे देखो, कितने ही सुरबिल सुमन खिले
खिंच जाओगे खुद इनको ओर इनके संमोहन से
छिप कर बैठी झुरमुट में कोयल का नाद सुनो
चलो, चलो, चलते रहो, अविराम चलो।।

झरने उस पर्वत ढलान से झरते जो
इनके पास चलो, अपने हाथों शीतलता छू ली
कहीं विदा अपने सारे संतापों की
चलो, चलो, चलते रहो, अविराम चलो।।

उंचा पर्वत है एक, पीछे उस पर्वत के
उग आयेगा आलोक उसी की चोट से
तैयार रखी नज़रों की, तुम्हें दिखेगा वो
चलो, चलो, चलते रहो अविराम चलो।।

दिखना ही बस नहीं, और प्रयत्न करो
इस आलो से पूरा–पूरा हृदय भरो
यात्रा जारी रखे, थक–थक कर जाना मत सो
चलो, चलो, चलते रहो, अविराम चलो।।

इस महालोक के इर्द–गिर्द ही मंडराते जाओ
जैसे मंडराता मनुष्य प्रफुल कमलों पर हो
ज्योतिस्नात हो ज्योति ही निखरो रोम रोम ज्योति भरो
चलो, चलो, चलते रहो, अविराम चलो।।

मेरा साथ निभा दे

वीना हप्पा
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

मां मेरा साथ निभा दे
मेरी नैया पार लगा दे
मां तू है अंतरयामी
मैं हूं क्रोधी और कामी
मां मेरा अहंकार थमा दे। मेरी नैया.....
रूकी नैया पड़ी मझदार है
मेरा दिल तो बड़ा बेकरार है
कोई ऐसी पतवार चला दे। मेरी नैया.....
गुज़रा बचपन और जवानी
करके आना और कानी
बुढ़ापे में लाज तू रख दे। मेरी नैया.....
मेरे मन में है अशांती
सारे बुरे कर्मों की
कोई सुरमई तान सुना दे। मेरी नैया.....
मैं तो हूं बड़ा हरजाई
बनी किस्मत मैंने बिगड़ाई
बिगड़ी किस्मत तू बना दे। मेरी नैया.....
मुझे दान दो अपने ज्ञान का
सुख और स्वाभिमान का
मेरे मन की शान्ति बना दे। मेरी नैया.....
काम क्रौध मद लोभ अहंकार
रोकते है मेरी पतवार
चारों पहर रहो मेरे दिल में
हर खुशी में हर मुश्किल में
मेरी मुशकिल आसान बना दे। मेरी नैया.....
हो कोई मुझ जैसा अहंकारी
मां तू उसकी भी है हितकारी
मेरा भी हितकार करा दे। मेरी नैया.....
मेरा नाम ही तो है वीना
मुरली जैसा गुण कोई ना
मीठी तान मुरली की बना दे। मेरी नैया.....

सपनों का महत्व



दर्शना देवी
लेखा अधिकारी

दिलों के साज़ पर धड़कनों की आवाज़ पर
एक महल बनाया है सपनों का, उस पर तू राज कर।

अधिक पाने की चाह नहीं
कितने सपने टूटे परवाह नहीं
एक टीस तो दिल में उठती है
पर लब पर कोई आह नहीं
स्कून आये दिल को मेरे, ऐसी तू फरियाद कर
एक महल बनाया है सपनों का उसपे तू राज कर।

सहमे–सहमें से यूं रहना,
रिमझिम अश्कों का बहना,
रंजिशें अपने दिल की
किसी से न कहना
दिल की बस्ती को ऐसे तो तू बरबाद न कर
एक महल बनाया है सपनों का उसपे तू राज कर।

दुख के दिन भी कट जायेंगे
राहों पे बिखरे कांटे हट जायेंगे
यहां सांसों पर कोई पहरा हो
हर ख्वाब बड़ा ही सुनहरा हो
ऐसी नई सुबह का आगाज़ तू कर
एक महल बनाया है सपनों का उसपे तू राज कर।

खुदा की रहमत, एक दिन बरसेगी तुझ पर
खुशियां मिलेगी दामन भर–भर कर
गम का काला साया था,
जो कभी तुझ पर छाया था,
ऐसे बुरे पलों को न तू अब याद कर
एक महल बनाया है सपनों का, उसपे तू राज कर।

वरदान

रतन लाल भान
पम्पोश, व.ले.प.

वरदान इतना दीजिए
हिन्दी को अपना लीजिए

हिन्दी से हिन्दोस्तान है, यह देश की पहचान है।
माने–न–माने यह कोई, हिन्दी हमारी शान है।

औरों को समझा दीजिए
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

इस में बुराई कुछ नहीं, इसमें भलाई है छुपी।
लिखना और पढ़ना सीख लो, कुछ भी रहे न अनकही।

इतना तो उपकार कीजिए।
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

हर वर्ष हमने प्रण किया, हर वर्ष यह वादा लिया।
हिन्दी को हम अपनाएंगे, वादा मगर वादा रहा।

वादा यह पूरा कीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना.....

हिन्दी में पत्राचार हो, इसमें स्नेह और प्यार हो,
सब द्वार खुल जाएंगे तब, भाषा पर जब ऐतबार हो।

शुभ काम इतना कीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना.....

जिन–जिन से तुम मिल पाओगे, उनको कृपया
सिखलाओगे
हिन्दी की चर्चा आम हो, हर एक को समझाओगे।

सहयोग अपना दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

हम सब को यह मालूम है, हिन्दी बड़ी मज़लूम है,
मन से इसे स्वीकारिये, भाषा बहुत मासूम है।

बच्चों को सिखला दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

लगता नहीं है कुछ कठिन, मन में अगर पक्की हो धुन
हिन्दी पे बस विशवास हो, इसमें छुपे हैं लाख गुण।

पढ़–लिख के सिखला दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

हिन्दी से हम कतराएं क्यों, अंग्रेज़ी पर इतराएं क्यों
भाषा हमारी सरल है, अपनाने से घबराएं क्यों।

गुन गान इसका कीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

माता से बिछड़ी बालिका, क्या दोष इसकी क्या खता
इर एक से विनती यह है, मिल जाए तो देना पता।

माता से मिलवा दीजिए
हिन्दी को अपना लीजिए
वरदान इतना दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए।

ज़िन्दगी



सुनील कुमार
हिन्दी अनुवादक

जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।
कभी धूप से छांव, कभी छांव से धूप।
कभी दुख से सुख, कभी सुख से दुख
के साथ यह जीवन बिताती है।
जिंदगी ना जाने कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

जीवन का वृक्ष ना जाने कब गिर जाए,
ना जाने कब यौवन का फूल मुरझा जाए,
जीवन भर आंख–मिचौली दिखाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

कभी निर्धन की झोली भर जाए,
धनवान को भी कभी तारे दिखाए।
जीवन के विभिन्न पहलुओं से मिलवाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैस रंग दिखाती है।।

कभी चंद लहरों के थपेड़ों से कश्ती डूब जाए।
तुफान में भी कभी तिनके का सहारा मिल जाए।
जीवन के उतार–चढ़ाव सिखाती है
जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

कभी बेरंग में भी रंग भर जाए।
खूबसूरती पर भी कभी दाग लग जाए।
जीवन की कई किताबें पढ़ाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

कभी सूनी आखें में सपने दे जाए।
कभी बने बनाये महल गिरा जाए।
जीवन की हर सच्चाई से रूबरू करवाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

कभी मात–पिता के माथे का बच्चे तिलक बन जाए।
पर वहीं उन्हें कभी दर–दर की ठोकरे खिलाये।
जीवन की अजब दुविधा दर्शाती है।
जिंदगी ना जाने कैसे–कैसे रंग दिखाती है।



आस

तारो देवी
सेवानिवृत वरिष्ठ लेखाकार

दिल न माने एसी बात
कैसे यह हो सकता है

बाहों में झुलाया मैंने
लोरी उसे सुनाई मैंने
हाथ पकड़ चलाया मैंने
सही राह दिखाई मैंने

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

नाजुक नाजुक हाथों वाला
प्यारी प्यारी बातों वाला
भीड़ से घबराने वाला
जल्दी घर को आने वाला

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

जब–जब देखा आस बढ़ी
जीने की एक राह दिखी
मां को मां ही रहने देना
सपने उस के तोड़ ना देना

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

पीले पत्ते गिर जाएंगे
गम के बादल छट जाएंगे
एक बहार आ जाएगी
नया सवेरा हो जाएगा

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

तोड़ना ना तूं दिल के तार
इज़्ज़त मेरी तेरे हाथ
सदा करूं मैं दिल से पुकार
रखना खुदाया मेरी लाज

दिल न माने ऐस बात
कैसे यह हो सकता है

बचना मेरे दोस्तो

आशा वातल,
वरिष्ठ लेखाकार

एक दिन चलते–चलते देखा,
एक मकान था बड़ा अनोखा
एक था उसमें प्रवेश द्वार,
वहां खड़ा था पहरेदार।
मैंने भीतर जाना चाहा,
पहरेदार ने शोर मचाया।
इसमें घुस तो जाओगे,
वापस खुश न आओगे।
तब मन धन खाली हो जाएगा,
वापस खुश न आओगे।
अन्दर गया तो क्या देखा–
वहां बैठी थी नरकों की नानी,
नष्ट कर रही थी भरी जवानी।
एक का था बड़ा रोब दबाव,
नाम था उसका शराब।
चरस गांजा उस घर के नौकर,
खिला रहे थे दर–दर ठोकर।
तंबाकू इस घर का नाती,
बांट रहा था बड़ी बडबादी।
बीड़ी–सिगरेट थी दो बहुएं,
छोड़ रही थी काले धुएं।
अफीम जर्दा इस घर के बेटे,
सुख की सांस न लेने देते।
गुटका तो सबका सरदार,
बीमारी का कर रहा व्यापार।
जब मैंने इनको देखा,
बाहर का दरवाज़ा खोजा।
सबने मुझको ऐसा घेरा,
लूट लिया सब कुछ मेरा।
मुफ्त में दिए उपहार
बिमारियां दी हज़ार।
पहुंच गया हूं मृत्यू के द्वार,
बीवी बच्चे हो गए बेघर।
सिर पर मौत खड़ी है,
शायद अंतिम घड़ी है।
दोस्तो कुछ कहना चाहता हूं,
मजबूरी में जाता हूं।
मेरी जैसी भूल न करना,
इस घर में कभी न घुसना।
जीते जी मर जाओगे,
मेरी तरह पछताओगे



कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

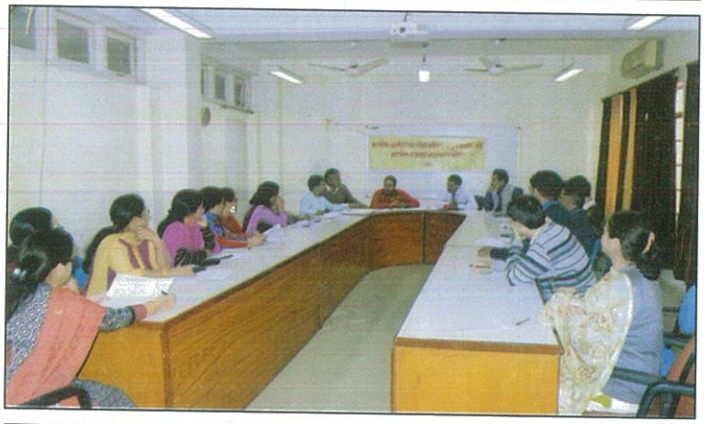
















गणतंत्र दिवस समारोह 2016 की झलकियाँ















स्वतंत्रता दिवस समारोह 2016 की झलकियाँ













वर्ष के दौरान आयोजित हिन्दी कार्याशालऐं

















क्रोध बने अवरोध

रेनू अम्बारदार
वरिष्ठ लेखाकार

एक दूसरे से रोज़ाना लेता है प्रतिशोध
क्रोध बने अवरोध, प्रगति में क्रोध बने अवरोध
खा जाता है सदगुण सारे, जोड़ा करे बुराई
अपना कद उंचा करने को, सम्मुख करे सफाई
होने देता नहीं भूलकर, भले बुरे का बोध
क्रोध बने अवरोध।
अपनी मनमानी में जीता, अपने मन की करता
चाहे कितना बलशाली हो, नहीं किसी से डरता
उस पर हुआ आक्रमण इसका, जिसने किया विरोध
क्रोध बने अवरोध।
प्यारा नहीं किसी का, यह कौन इसे समझाये
सच पूछो तो इस दुनिया में क्रोध प्यार को खाये
जीवन बने सार्थक यदि तुम करो क्रोध पर शोध
क्रोध बने अवरोध।
क्रोध आग है एक तरह की, भस्म करे, जो जीवन को
धूं–धूं करके स्वाहा कर दे मुस्काते उपवन को
कह दो तुम अलविदा क्रोध को बस इतना सा है अनुरोध
क्रोध बने अवरोध–क्रोध बने अवरोध।

ग़ज़ल

सुनीता सरॉफ
स.ले.प. अधिकारी



1. मुद्दतों बाद वो नज़र आया
आज फिर चांद मेरे घर आया।
रश्क करती है चांदनी मुझ पर
रंग जब से मेरा निखर आया।
तोड़ कर इस जहाँ के सब बंधन
दूर बस्ती से वो किधर आया।
बेबसी देखकर ज़माने की
आंखों में फिर लहू उत्तर आया।
उम्र सारी कटी समंदर में
तब मेरे हाथ में गुहर आया।
2. न जाने ये कैसी सज़ा दे रहे हैं
मेरे जख्मों को हवा दे रहे हैं।
सुकूं दे रहा खिजाओं का मौसम
बहारों का फिर भी पता दे रहे हैं।
सभी को मालूम है मरना है एक दिन
मगर सब ज़िंदगी की दुआ दे रहे हैं।
ये कैसा आया है दौर–ऐ–मुहब्बत
जो अपने हैं वो भी जफा दे रहे हैं।
भटकता है उन के ही दम से ये गुलशन
वो खुशबू की सब को कबा दे रहे हैं।

तुलना का चक्रव्यूह



पुष्पा तिक्कू
सुपरवाईज़र

तुलना के चक्रव्यूह में भटकती रही सारा जीवन
तुलना का चक्रव्यूह न होता तो शायद सुखमय होता।
मेरा भी जीवन....

बचपन से ही तुलना की जाने लगी मेरी
हाव–भाव से तो लगता है, हैं इसके अच्छे लक्षण,
भविष्य जानने वाले क्या जान गए थे मेरा जीवन?
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो शायद सुखमय होता
मेरा भी जीवन....

होश संभाला तो तुलना के तराजू में
जन्म दाताओं ने तोलना आरम्भ किया,
विधि के ही अनुसार तो चली थी मैं
पर प्रयास करके भी फीका रंग पकड़ने लगा मेरा जीवन।
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो शायद सुखमय होता
मेरा भी जीवन....

यौवन ने ली अंगड़ाई तो क्या मैं
रह पाती तुलना से वंचित
सुयोग्य व कर्मशील होने पर भी
कहीं न हो पाया मेरा चयन।
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो अवश्य सुखमय होता
मेरा भी जीवन....

अब तो तुलना ने तो नया ही रूप अपनाया
तुलना का ही पहनावा मुझे अंत में पहनाया
तुलना.....तुलना.....तुलना.....
तुलना श्रेणी में ही मैंने आरक्षण पाया
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो शायद सुखमय होता
मेरा भी जीवन....



झूठी शान

संजीव वर्मा
स० ले० प० अधिकारी

बड़ा ही कम जीवन है जो हम अपने लिये जीते हैं – अधिकतर जीवन हम समाज में झूठे दिखावे या झूठी शान प्राप्त करने में व्यतीत कर देते हैं। हमारे हर कार्य – घरेलू, समाजिक अथवा अन्य, अकसर हमारा एक ही मापदंड रहता है कि मान सम्मान प्राप्त करे, चाहे बाद में कष्ट ही क्यों न भोगने पड़ें मगर हम आडम्बर रचाने या दिखावटी व्यवहार से बाज़ नहीं आते। कई बार आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि हम यह खाते हैं हम वह खाते हैं, इस उद्योग की वस्तुयें उपयोग में लाते हैं–आदि आदि। अरे भाई आप कुछ भी खायें इस में दूसरों को बताने की क्या आवश्यकता है – आप जो भी खा रहे हैं अपने पेट में डाल रहे हैं। आप कुछ भी खा लें पेट में फूल तो उगेंगे नहीं।

कई लोग अपने लिये बड़े और भव्य भवनों का निर्माण करते हैं और फिर बताते हैं कि हमने अपने घर के शौचालय में दो लाख रू. का मकराना संगमरमर लगवाया है। जिसमें चेहरा भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है। और भई – आप शौचालय में क्या देखना चाहते हैं। आप का शौचालय 10 हज़ार रूपये का है या पांच लाख रूपये का, आपने वहां क्या सभा लगानी है या पकवान तलने हैं? फजूल में लोगों की वाह वाही लूटने की तृष्णा। कई लोगों ने अपने गले में इतनी मोटी सोने या किसी अन्य कीमती धातु की जंजीर पहनी होती है और दिखाने के लिये उसे कमीज़ से बाहर निकाल कर चलते हैं– जैसे भैंस के गले में जंजीर डाली गई है। पता नहीं ये लोग क्या दिखाना चाहते हैं कि वे बहुत वज़न उठा सकते हैं या अधिक धनी व्यक्ति हैं। क्या पता दिखाने की खातिर ऋण उठाकर ही सोने का पट्टा गले में डाला है। ऐसे दिखावटी लोगों का मूल्य बस उतना ही होता है जितने रूपये की वे जंजीर पहनते हैं।

कई बार तो देखने में आता है कि आदमी के रोज़मर्रा जीवन की गाड़ी की वायु पस्त हो चुकी होती है फिर भी वो दिखावटी जीवन जीने के प्रयास में रहता है। विवाह या ऐसे ही कई अन्य समारोह पर वह ऋण उठा कर भी समारोह का आयोजन करता है और ऋणी होकर तनाव ग्रस्त रहता है। फिर भी बताता फिरता है कि बड़ा ही स्मरणीय समारोह आयोजित किया था मैंने। उसे लगता है कि समाजिक प्रतिष्ठा इस आडम्बर से बड़ी है। सत्य तो यह है कि लोग चाहे आप के विवाह आदि समारोह में बादाम, पिस्ता या अन्य छत्तीस प्रकार के व्यंजनों का सेवन करे पर बाहर आकर त्रुटियां अवश्य ही निकालते है। एक बार मुझे एक भव्य समारोह में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। बारात एक गांव से आई हुई थी। खाना खाते–खाते एक ग्रामीण मेरे पास आकर बोला – देखिये भाई साहब – ये चटनी बू मार रही है। चूँकि जून मास था ऐसा होना स्वाभाविक था। जहां एक से एक बढ़िया व्यंजन उपलब्ध थे, पर उस ने अपनी भड़ास बेचारी चटनी पर निकाली। नतीजा यह निकला कि सभी मेहमानों के लिए चटनी चर्चा का विषय बन गई। वैसे चटनी भी कई प्रकार और कई स्वाद की होती हैं। क्या पता उस चटनी की खुशबू और स्वाद उस बाराती को पसन्द न आया हो। कहने का अभिप्राय यह है कि ऐसी प्रवृति देखने में आती है कि टिप्पणी करना खाने से अधिक आवश्यक है। फिर भी हम समाज की झूठी वाह–वाही के पीछे होते हैं और अपने आप को कष्ट झेलने पे मजबूर करते हैं। हम सोचते हैं कि हमारा समारोह अस्मरणीय होना चाहिये। लोग आज खा कर कल भूल जाते हैं – यही सत्य है। विवाह तो विवाह, लोग मृत्यु जैसे शोक ग्रस्त अवसर पर भी दिखावे की भावनाओं को तृप्त करते देखे गये हैं। ये कहते सुने गये कि पिता जी की मृत्यु पर अर्थी के पीछे इतनी भीड़ उमड़ी कि पांव रखना भी असंभव हो रहा था या शहर का कोई भी व्यक्ति आये बिना न रहा। जिस भीड़ की बात की जा रही है वह तो बस भीड़ है जो एक सामाजिक दायित्व निभाने का कार्य करती है वर्ना उन्हें किसी की मृत्यु का शोक नहीं। पहले–पहले तो अर्थी के पीछे चल रही भीड़ राम नाम सत्य का जाप करते दिखती थी। पर अब यह चलन समाप्त हो चला है। लोग अपने निजी वाहनों पे सवार फर्राटें से शमशान जा पहुंचते हैं। समय का अभाव है। वहां खड़ी भीड़ में कोई मोबाईल सुन रहा होता है, कोई व्यापार

की बातें कर रहा होता है। कोई जीवन जायदाद की बातों में उलझा तो कोई वहां वातावरण का अध्यन कर रहा होता है – नदी प्रदूषित हो गई है, शमशान पर ये सुविधा उपलब्ध नहीं है। कोई मरने वाले के परिवार की बातें करके व्यस्त होता है या कोई अन्य चुगली निंदा में मगन। बस सभी को इसी बात की प्रतीक्षा होती है कि कब शव को अग्नि की भेंट किया जाये तो चलते बनें। कभी–कभी अर्थी के पहुंचने में कुछ विलंब हो जाये तो कुछ लोग जिन्हें अत्यंत ही अवश्य कार्य होते हैं वहां से चलते बनते हैं और बाद में दूरभाष द्वारा बता देते हैं कि आप की देरी की वजह से मुझे वहां से आना पड़ा। यूं लगता है ऐसे लोगों के कार्य कभी भी समाप्त न होंगे। एक व्यक्ति की मृत्यु जून मास के महीने में हो गई। शव यात्रा में सम्मिलित एक व्यक्ति बोला – इसे भी इसी गर्मी में मरना था – हमारी मारे – गर्मी के जान निकल रही है। मैंने उससे कहा कि आप अपनी मृत्यु किसी अच्छे और सुहावने मौसम में निर्धारित करवाना। इस भीड़ की यही प्रवृति है। फिर भी हमें इसी भीड़ की चिन्ता है कि कुछ समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाये। हमारे परिजन की अर्थी के पीछे हज़ारों की भीड़ थी – हम समाज में अपनी धाक जमाने के लिये बातें करते हैं। भीड़ हज़ारें की थी या नहीं थी – क्या धर्मराज वहां ऊपर आप के स्वागत् के लिये बैंड बाजे का प्रबन्ध करता है या कम भीड़ वाले को दुत्तकार देता है

यह वही भीड़ है जो एक दिन भारतीय टीम के प्रदर्शन पे उछल कूद कर रही होती है और अगले ही दिन खराब प्रदर्शन पर गाली गलौच करने लगती है। यह वही भीड़ है जो एक दिन आप को अम्बर तक ले जाती है और अगले दिन धरती की धूल चटा देती है। यह भीड़ किसी की नहीं बस अपने आप में दिलचस्पी रखती है।

एक व्यक्ति हस्पताल में अपने आपरेशन हेतु भर्ती था। मैं उसे देखने गया वह अपनी समाजिकता का प्रमाण देते हुये कहने लगा कि आज मुझे लगभग अस्सी लोग देखने आये। उसके चेहरे पर एक विजेता की मुस्कान थी। मैं सोचने लगा जिस दिन यह मृत्यु को प्राप्त होगा उस दिन कितने व्यक्ति इसके पीछे आए हैं यह कैसे बतायेगा।

एक महिला का पति रोज मदिरा सेवन कर उसे प्रताड़ित करता था। यही उनके रोज–मर्रा का जीवन हो चला था। एक दिन अचानक उस व्यक्ति की मृत्यु हो गई। मैं भी वहाँ गया तो महिला यह कहने से नहीं चूकि कि असंख्य लोग थे उसके पति की अर्थी में। शायद महिला यह बताना चाह रही थी कि उसका पति बड़ा ही समाजिक प्राणी था। और जो उस महिला के शरीर पर अब भी अमिट चिन्ह थे जो उसके पति की दी हुई सोगातें थीं (यातनायें) उस की बात नहीं की उसने।

एक व्यक्ति तथा उसकी पत्नी महानगर में किसी निजी उद्योग में कार्यरत थे। महानगर में रहकर बड़ी ही कठनाई से अपनी जीविका चला रहे थे। व्यक्ति के बूढ़े पिता भी साथ थे। किराये के मकान छोटे से में रहते थे। एक दिन अचानक पिता की मृत्यु हो गई। आस–पड़ोस के लोग एकत्रित हो गये बोले भाई साहब जहां–जहां भी फोन करना या संबंधियों को बुलाना है हम बुला देंगे। परंतु उस व्यक्ति ने कुछ सोच विचार कर एक वाहन का प्रबंध किया और पिता के शव को ले जाकर क्रियाकर्म कर आया। लोगों के पूछने पर कि आप कहाँ चले गये थे। उसने बताया–संबंधियों को एकत्रित करना, रहने का प्रबंध करना, खिलाना पिलाना मेरे बस के बाहर था। यह है परिस्थितियों की विडम्बना। बहुत बार हम कुछ करने के हाल में नहीं होते पर क्या है–समाज वाले क्या कहेंगे या नाक कट जायेगी। नाक बचाते–बचाते हम अपनी गर्दन कटवा लेते हैं और फिर देर तक इस पीड़ा को सहन करते रहते हैं।

इसी प्रकार देखा गया है कि कई बार लोग घर के बुजुर्ग सदस्य का लालन पालन ठीक ढंग से नहीं करते या कर पाते। आर्थिक वजह हो सकती है या समय की किल्लत या कोई और। लेकिन मृत्योपरांत वह लोगों को यह बताना आरम्भ कर देते हैं–बढ़िया करवाया सब कुछ। बड़े से बड़े चिकित्सक को दिखाया, दिल्ली हस्पताल ले के गये। अब सब क्रियाकर्म बढ़िया से करवा दिया। गंगा जी हो आए, दान करवाया, हवन करवाया, पाठ रखवाया। मां की आत्मा की शांति के लिये सब किया–ये सब दुनिया की प्रदर्शनी दिखाई जा रही है। जीते जी मां तरसती रही कुड़ती रही। तब

कुछ न किया अब सब कुछ किया और उनके श्राद्ध के बहाने हर वर्ष स्वादिष्ट पकवानों के चटखोरे लेंगे। सब दिखावा–संसार को दिखाने के लिये।

कई लोग अपने बच्चे को बड़ी पाठशाला में इसलिये दाखिला दिलवाना चाहते हैं क्योंकि पड़ोसी का बच्चा भी किसी बड़ी प्रसिद्ध पाठशाला में पढ़ता है, चाहे बाद में कितने ही आर्थिक संकट उठाने पड़ें। बच्चा चाहे पढ़ाई में प्रथम आये या न आये पर माता–पिता हमेशा प्रथम–पड़ोसी से प्रतिर्स्पधा करते रहेंगे।

बस यही कुछ करते हैं हम – दिखावा ही दिखावा। कभी शादी पर, कभी मृत्यु पर– "पिता जी सीधा स्वर्ग में गए। जैसे पिता जी के लिये आरक्षण करवा के रखा हो। कभी रोगों के नाम पर – वो रोग की गंभीरता से चिंतित नहीं–हां कितने लाख लगा दिये और कितना बड़ा हस्पताल था क्या बतायें। कभी खाने के नाम पर – ऐसे लोग घर में भिन्डी की सब्ज़ी खाकर बाहर आकर पनीर या मुर्गे के डकार लेने लगते हैं।

समझदारी इसी में है कि हम अपने आप को दिखावटी जीवन से बचाये रखें और फिज़ूल की प्रति स्पर्धाओं से खुद को बचायें। जितना है उतना ही दिखायें। वास्तविकताओं में विश्वास रखें अड्म्बरों से बचें। भीड़ की वाह–वाही के लिये अपने को कर्ज़दार न बनाएं।

चंद शेर



सुनीता सरॉफ
स.ले.प.अ.

1. हर स्मित अंधेरा रहता है
   ऐ चांद मेरे घर आया कर।।
2. चांद आया और चला भी गया
   पर इसकी मुझे खबर न हुई
3. काश ऐसा कभी खुदा करता
   कोई तेरे लिए दुआ करता।।
4. तुम समुन्दर की बात मत करना
   एक कतरे में मैं समुन्दर हूं।।
5. चोट लगती है जब भी फूलों से
   दर्द होता है एक ज़माने तक।।
6. एक मुद्दत से मेरी हसरत है
   मैं भी उतरूं कभी समुन्दर में।।
7. वो न होता अगर रफीक–ए–सफर
   मेरा अपना पता भी न होता।।
8. बेसबब अश्क यूं नहीं बहते
   सब की होती है दास्तां अपनी।।
9. बरसों से फिर रही हूं तमन्ना लिए
   मेरा भी तेरी ज़ात में एक दिन शुमार हो।।
10. निवाला हर कोई बनता है तेरा
    मगर ऐ मौत फिर भी तू हसीं है।।

नज़्म

इन्सान जब से
मतलबी हुआ है
हर शख्स यहां
तन्हा तन्हा हुआ है।
हर कली बेचैन है
बस खिलने के लिए
बहारों का मौसम
बदला बदला हुआ है।
मौत न जाने कब
आ के दे दे दस्तक
हम नादान समझते
वक्त ठहरा ठहरा हुआ है।



राष्ट्र निर्माण में हिन्दी का योगदान

कुन्दन कुमार
लेखा परीक्षक

हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है। यह भारत में सबसे अधिक भूभाग में बोली जाती है। देश की कुल आबादी के 40% लोग प्रथम भाषा के रूप में तथा 30% लोग अपनी द्वितीय भाषा के रूप में इसका उपयोग करते हैं। भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ विश्व में सबसे अधिक भाषाएं बोली व लिखी जाती हैं। ऐसे देश में इतने प्रतिशत लोगों के द्वारा एक भाषा के प्रति अपनापन दिखाना अपने आप में उस भाषा की महत्ता को स्पष्ट करता है। भाषा लोगों को जोड़ने एवं समाज के विकास का सबसे बेहतर साधन है। चूंकि हिन्दी भारत के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाती है, अतः भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण की यह भूमिका हिन्दी के द्वारा ही निभाई जा सकती है।

भारत करीब 150 वर्षों तक अंग्रेज़ों का उपनिवेश रहा था। अंग्रेज़ों ने जब भारत में अपना शासन आरंभ किया तब भारत अनेक प्रकार से कई रियासतों, भागों एवं टुकड़ों आदि में बँटा हुआ था। देश के सभी प्रदेशों के लोग अपनी–अपनी भाषा का प्रयोग करते थे। प्रारंभिक काल में जब स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारंभ हुआ तो पढ़ा–लिखा मध्य वर्ग जो इसकी अगुआई कर रहा था उसने लोगों को जोड़ने के लिए भाषा की महत्ता को समझा। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने हिन्दी को भारत की संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग करना शुरू किया। इसने देश को एक रूप में जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस संदर्भ में कुछेक महापुरूषों का नाम बहुत ज़रूरी है। महात्मा गाँधी जिनकी मातृ भाषा गुजराती थी, बाल गंगाधर तिलक जिनकी मातृ भाषा मराठी थी, सी० राजगोपालाचारी जिनकी मातृ भाषा तमिल थी आदि ने मिलकर राष्ट्रभाषा के महत्व को समझा तथा हिन्दी से देश को जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम माना। हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई। हिन्दी देश की संपर्क भाषा के रूप में लोगों को जोड़ने में बहुत अधिक सफल रही एवं राष्ट्र निर्माण का जो कार्यक्रम गाँधी जी तथा अन्य नेताओं द्वारा चलाया जा रहा था, पूर्णतया सफल रहा। हिन्दी के इस योगदान को देखते हुए संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित किया गया।

हिन्दी संघ (अर्थात भारत देश) राजभाषा तो बन गई परंतु इसके राष्ट्रभाषा घोषित करने के पूर्व ही इसके साथ विवादों का साया भी जुड़ गया। दक्षिण के राज्यों प्रमुखतः तामिलनाडु तथा पं० बंगाल ने भाषा के नाम पर हिन्दी का यह कहकर विरोध करना शुरू किया कि अगर हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बनेगी तो क्या अन्य सभी भाषाएँ यथा–बंगाली, तमिल, तेलगू आदि राष्ट्रन्तर अथवा राष्ट्रविरोधी भाषाएँ हो जाएंगी। फलतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्ष में विभिन्न संवैधानिक प्रावधान किए गए ताकि आगे चलकर हिन्दी को मज़बूत स्थिति प्रदान की जा सकें।

भारत का संविधान हिन्दी को अपने अनुच्छेद 343 से 351 तक के द्वारा हिन्दी के पक्ष में विभिन्न संवेधानिक प्रावधान उपलब्ध कराता है, जिसके तहत न सिर्फ हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया, अपितु इस बात की भी अपेक्षा की गई कि संघ की राजभाषा को समृद्ध करने के लिए केंद्र यथासंभव उपाय करे। इसके तहत एक केन्द्रीय हिन्दी समिति की स्थापना की गई। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में यह समिति हिन्दी के विकास आदि के संबंध में निरीक्षण करती है।

शायद हमारे देश के लोग राष्ट्रभाषा के महत्व को या यूँ कहें कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को नहीं समझ सके हैं। सामान्यतः हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में जोड़ने अथवा शब्द निर्माण के रूप में अज्ञानता को लोग दो प्रमुख कारणों से सबंद्ध करते हैं:–

1. भारत एक बहुभाषी देश है, यहाँ कोई अकेली भाषा राष्ट्रनिर्माण को कैसे अंजाम दे सकती है।
2. हिन्दी बहुत अधिक समृद्ध व विकसित भाषा नहीं है, फलतः यह इस भूमिका को अच्छी तरह से नहीं निभा सकती ।

हम दोनों कारणों की प्रकृति की जाँच करने पर पाते हैं कि ये दोनों ही कारण तर्क से परे हैं एवं गुमराह करने वाले हैं। यह सच है कि भारत एक बहुभाषी देश है एवं यहाँ कई भाषाएँ बोली जाती हैं। परंतु ऐसा नहीं है कि ऐसा किसी और देश में नहीं है। चीन की राष्ट्रभाषा मंडारिनं चीन के 1949 में स्वतंत्रता से पूर्व एक छोटे से प्रदेश

में बोली जाती थी परंतु अज मंडारिनं के साथ चीन की प्रगति से कौन अवगत नहीं है। इजरायल की राजभाषा हिब्रू जिससे इजरायल का राष्ट्रनिर्माण हुआ, कई हज़ार सालों से इजरायल में नहीं बोली जाती थी। ऐसे ही रूस ने 1917 की क्रांति के बाद जर्मन की जगह रूसी को राष्ट्रभाषा बनाया एवं राष्ट्रनिर्माण किया। आज इन भाषाओं के जोड़ने की क्षमता से पूरी दुनिया सहमत है, फिर हिन्दी तो देश के 70% लोगों के बीच बोली जाती है। अत राष्ट्रनिर्माण में हिन्दी की महत्ता बहुत ही महत्वपूर्ण है।

इसका दूसरा बिंदु है कि, हिन्दी बहुत ही समृद्ध भाषा नहीं है। भाषा की समृद्धि को दो स्तरों पर समझा ज सकता है—प्रथमतः भाषा की वैज्ञानिकता के संबंध में तथा दूसरा भाषा की व्यापकता के संबंध में। जहाँ तक हिन्दी की वैज्ञानिकता का प्रश्न है, यह बात जगजाहिर है कि लिपि एवं ध्वनि के संबंध में हिन्दी, अंग्रेज़ी से कोसों आगे है। व्यापकता के संबंध में हिन्दी अंग्रेज़ी से पीछे है जो इस कारण से हुआ कि उपनिवेशवाद के दौर में अंग्रेज़ी उस देश की भाषा थी जिसने संपूर्ण विश्व पर राज किया जबकि हिन्दी एक उपनिवेश की भाषा थी। फलतः हिन्दी को व्यापक रूप से बढ़ने का मौका नहीं मिला।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने एवं राष्ट्रनिर्माण के संबंध में इसके महत्व को समझते हुए हम निम्न कदम उठा सकते हैं:—

1. प्रथमत : हमें त्रिभाषी फार्मूले को पूरी विश्वसनीयता के साथ अपनाना पड़ेगा। इस संबंध में सिर्फ खानापूर्ति से काम नहीं चलेगा। हिन्दी प्रदेश के लोगों को ही इसके लिए बड़ा दिल दिखाना होगा एवं हिन्दी व अंग्रेज़ी के अलावा तीसरी भाषा के रूप में कोई दक्षिणी भाषा अथवा उत्तरी—पूर्वी की भाषा सीखनी चाहिए।
2. सरकारी कर्मचारियों को केवल पारितोषिक के लिए हिन्दी में कार्य नहीं करना चाहिए, अपितु उन्हें सच्चे दिल से इस भाषा की उन्नति हेतु प्रयास करने चाहिए। यदि कोई कर्मचारी जिन्हें हिन्दी के लिए प्रशिक्षण व पुरस्कार मिला हो, हिन्दी में नहीं कार्य कर रहा हो, उसे दंडित करना चाहिए।
3. सरकारी नोकरशाहों व राजनेताओं को इसकी महत्ता को समझते हुए उसके लिए पर्याप्त उपाय करने होंगे।
4. केंन्द्रीय हिन्दी अनुवाद आयोग को अनुवाद के संबंध में संख्यात्मक नहीं, गुणात्मक प्रभाव देखने चाहिए इसको ध्यान में रखकर ही अनुवाद व तकनीकी प्रयोग का विकास करना चाहिए।
5. हम सभी देशवासियों को भी इस संबंध में उतरदायित्व हैं एवं यथासंभव हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए।

इन उपायों को ध्यान में रखकर ही हम हिन्दी को राष्ट्रनिर्माण का प्रमुख अस्त्र बना सकते हैं एवं आए दि होने वाले भाषाई झगड़ों को समाप्त कर सकते हैं। हम सभी राष्ट्रभाषा की महत्ता को समझते हैं एवं राष्ट्रनिर्मा के रूप में इसके योगदान से परिचित हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भी हिन्दी ने ऐसा कर दिखाया है आगे भ राष्ट्रनिर्माण के लिए उसे ऐसा ही करना होगा।

चटपटी चिट्ठी

रमेश कौ
स.ले.प.अ

शिरीन के पति शहर के एक विद्यालय में अध्यापक थे। एक दिन उसने अपने पति को पत्र लिखा। अल्पज्ञानी होने के कारण उसे पता न था कि पूर्ण विराम कहां लगेगा। पत्र इस प्रकार था :—

मेरे प्यारे जीवन साथी, मेरा प्रणाम आपके चरणों में। आपने दो महीने से चिट्ठी नहीं लिखी मेरी सहेली को। आई.टी.आई में नौकरी मिली है हमारी गाय को। बछड़ा हुआ है दादा जी। शराब शुरू कर दी है मैंने। तुमको बहुत पत्र लिखे पर तुम नहीं आए कुत्ते के बच्चे। भेड़ि खा गया दो दिन का राशन। छुट्टी पर आते समय आना एक खूबसूरत औरत। मेरी सहेली बन गई है इ समय टी.वी पर गाना गा रही है हमारी बकरी। बेच गई है तुम्हारी मां। तुमको याद कर रही है एक पड़ोस हमें बहुत सता रही है तुम्हारी बहन। सिर दर्द से लेट है। खत लिखना मत। भूल जाना।

तुम्हारी प
शिरी



समाज में नारी की स्थिति

मनु अनेजा
लेखा परीक्षक

रूपरेखाः—

1. भूमिका
2. प्राचीन काल में नारी की स्थिति
3. बदलते दौर में नारी की स्थिति
4. सुधार के उपाय
5. उपसंहार

1. भूमिकाः— हमारे वेदों, शास्त्रों, महाकाव्यों में नारी को 'देवी' कहा गया है। नारी को जगत जननी भी कहा गया है। किंतु वास्तविकता में उसे इस तरह नहीं माना जाता। बदलते समय के अनुसार इसमें काफी सुधार हुए हैं और शहरों में नारी घर की चार दीवारी से निकलकर पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है। लेकिन नारी की स्थिति गांवों में, कस्बों में ज़्यादा नहीं बदली है। आज भी नारी को समाज की पुरानी (रूढ़ियां), मानसिकता का शिकार होना पड़ता है। अतः हम कह सकते हैं कि समाज में अभी भी "पुरूष प्रधानता" है। अतः नारी की स्थिति को बेहतर बनाने में तथा उसे पुरूषों के बराबर अधिकार और दर्जा दिलाने में अभी बहुत अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

2. प्राचीन काल में नारी की स्थितिः— प्राचीन काल में (19 वीं या 20 वीं सदी में) नारी की स्थिति बहुत दयनीय थी। उन्हें केवल यह ही सिखाया जाता था कि उनके पति ही उनके परमेश्वर हैं और उनकी अपनी कोई अलग से पहचान नहीं है। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था और घर की चार दीवारी में ही रहना पड़ता था। कई प्रान्तों में नारी को उसके पति की मृत्यु के बाद उसके साथ ही सती होने को मजबूर किया जाता था। (सती प्रथा)। यद्यपि वेदों, पुराणों में नारी को देवी तुल्य माना गया हो, परन्तु समाज में कभी भी नारी को पुरूष के बराबर नहीं माना गया है। अनेक महापुरूषों ने 19वीं तथा 20वीं सदी में नारी की स्थिति सुधारने हेतु उपाय किए। लार्ड विलियम बैंटिक ने 1929 में सती प्रथा पर रोक लगाई। समाज में पुरूष की मृत्यु के बाद विधवा स्त्री को फिर से विवाह की अनुमति दी गई। राजा राम मोहन राय जैसे महापुरूषों ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया।

स्त्रियों को भी घर की चार दीवारी से निकल कर बाहर काम करने की अनुमति कुछ हद तक प्रदान की गई। महारानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्तान जैसी स्त्रियां भी उसी काल की हैं जिन्होंने क्रमशः अंग्रेज़ों की ईंट से ईंट बजाई तथा मुगलों की भारत पर सल्तनत का प्रतिनिधित्व किया। अतः इन स्त्रियों से प्रेरणा ग्रहण कर तथा समाज के कुछ महापुरूषों व स्त्री शिक्षा के समर्थकों के प्रयासों से कुछ स्त्रियों ने अलग अलग कार्यक्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई। इन स्त्रियों में श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती इंदिरा गांधी आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इन स्त्रियों ने समाज की पुरानी रूढ़ियों, रीति रिवाजों, पर्दा प्रथा को तोड़कर समाज में अलग पहचान बनाई।

3. बदलते दौर में नारी की स्थितिः— 20वीं सदी के अंत के वर्षों तथा आज के 21वीं सदी के बदलते दौर में नारी की स्थिति काफी हद तक सुधरी है। उन्हें शिक्षा दी जाती है। पर्दे में रहने पर विवश नहीं रहना पड़ता। आज समाज में "कल्पना चावला, मैरी कॉम, साइना नेहवाल, लता मंगेशकर" जैसी स्त्रियां आज की नारी की प्रेरणा स्त्रोत रही हैं। आज की नारी घर की चार दीवारी से निकल कर पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। अंतरिक्ष तक "कल्पना चावला" जैसी नारियां पहुँची हैं। किंतु दुःख की बात है कि नारी को अभी भी दहेज प्रथा के चक्र से मुक्ति नहीं मिली है। घरेलू तौर पर अभी भी समाज पुरूष प्रधान है। घर की चार दीवारी के अंदर किसी न किसी रूप में शारिरिक एवं मानसिक रूप में उनका शोषण किया जाता है। चलती बस में नारी के साथ बलात्कार की घटना, वह भी भारत की राजधानी दिल्ली में, ऐसे देश में जहां देवता भी अवतार लेकर निवास हेतु आए हैं, बहुत शर्मनाक है। आज नारी को "भ्रूण हत्या" के रूप में एक नए दुःश्चक्र से दो चार होना पड़ता है। लड़कियों को पैदा ही नहीं होने दिया जाता। आज हमारे देश में पुरूष स्त्री लिंगानुपात बहुत कम है। तथापि सरकार की तरफ से बहुत से कदम उठाए गए हैं। किंतु स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है।

4. सुधार के उपायः— आज के दौर में अपनी स्थिति को सुधारने हेतु नारी को स्वंय आगे आना होगा। उसे अपनी

कोख में लड़की की हत्या पर आवाज़ उठानी होगी। अपनी बहु बेटियों को शिक्षित करना होगा। युवाओं को भी आगे आना होगा। उन्हें अपनी बहनों, पत्नियों को उनके समान अधिकार देने की पहल करनी होगी। उन्हें अपने प्रतिद्वंदी के रूप में नहीं अपने पूरक के रूप में देखना होगा। नारी को समाज में इज़्जत, मान सम्मान देना होगा। कहा जाता है कि औरत ही औरत की दुश्मन होती हैं। अतः सास को भी पोते का मोह छोड़कर पोते–पोती को समान समझकर अपनी बहु के गर्भ में पल रहे शिशु को जन्म लेने की अनुमति देनी होगी। "पुरूष प्रधान" समाज को "स्त्री–पुरूष" प्रधान समाज बनाना होगा। सबसे ज़्यादा महत्व शिक्षा को देना होगा। नारी शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होगी। तथा अपने बहु–बेटियों को भी शिक्षित करेगी और तभी हमारा समाज नारी को बोझ नही समझेगा और उन्हें पुरूष के समान महत्व देगा।

5. उपसंहारः– जिस धरती पर देवी देवता भी जन्म लेने को ललायित रहते हैं उस भूमि पर नारी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय और दयनीय है। किन्तु यह स्थिति केवल एक दो लोगों के प्रयास से नहीं सुधरेगी इसको सुधारने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा। तभी नारी को पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या से छुटकारा मिलेगा। अगर समाज में नारी को मान सम्मान मिलेगा तो देवताओं का आर्शीवाद भी हमारे ऊपर बना रहेगा और वे फिर से इस धरती पर अवतार हेतु आते रहेंगें। कहा भी गया है–

"यत्र नारीस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात जहां नारियों (नारी) की पूजा होती है वहीं देवता निवास करते हैं। अतः समाज को खुशहाल बनाने के लिए नारी को पुरूष के समान समझना चाहिए।



मैं लौट आया

दर्शना भारती
लेखा अधिकारी

अपने अरमानों की चादर लपेटे
अपनी भावनाओं को मन में समेटे
आज मैं निकल पड़ा हूं घर से, हमेशा के लिए
उस घर से यहां मैंने कितने सपने संजोये थे,
पर वक्त का कठोर उपहास
अब न कोई उम्मीद बची ने कोई आस
एक–एक करके हर सपना बिखरता गया
उस रेत के टीले की तरह
जहां धुंधली सी आकृतियां आकर मुझे चिढ़ाती है
और पूछती है
"कहां गये वो साथी जिन पर तुझे गुमां था
क्यों तन्हां हैं तेरी महफिलें क्यों सूना तेरा मकां है"
वो जिगर के टुकड़े जिनके लिए पल–पल जिया और मरा मैं।
आज अन्जाने से काफिले में कहीं खो से गये हैं
भौतिकता की दौड़ में उनकी एक झलक पाने को तरस गया हूं मैं।
हल्के–हल्के पग भरता हुआ, क्या खोया क्या पाया
जोड़–तोड़ करता हुआ
घर से कहीं दूर ऐसे मंज़र से मेरा सामना हुआ
जहां बाप के झुके कंधों पे बोझा लदा था, बेटा चारपाई में लेटा नींदें उड़ा रहा था
इसे वक्त कहें या किस्मत, बुढ़ापे की दहलीज़ पर भी बच्चों के लिए पैसे कमां रहा था
पल भर मैं रूका, अपनी जवानी से लेकर बुढ़ापे का सफर
मेरी धुंधली सी आंखों में था।
बेशक मैं तन्हां रहा उम्र भर पर उस तन्हाई में
बच्चों की प्यारी सी मीठी यादों का समावेश था
न किसी से कोई शिकवा न कोई आक्रोश था
मैं चलता रहा एक अन्जाने से सफर पर
पर अचानक एक आहठ हुई, मेरे कांधे पे किसी का हाथ था
वापिस मुड़ा, मेरे पीछे मेरी बिटिया मुस्कुरा रही थी
अपने छोटे से मुन्ने को लिए उसे देख मेरे दिल की मुरझाई कली खिल गई, मानो जन्नत मुझे मिल गई
फिर एक बार जीने की चाहत लिए, दिल में एक राहत लिए
मैं वापिस लौट आया।



नारी सशक्तिकरण

इन्द्रराज मीना
लेखा परीक्षक

1. **प्रस्तावनाः—** वैदिक काल से ही भारतीय समाज मातृसन्तात्मक रहा है। प्राचीन काल से अब तक समाज में नारी की स्थिति में कई बदलाव देखे गये हैं। हमारे देश में आज़ादी के बाद में भी नारी को सही जगह नहीं मिल पाई है। नारी उत्थान के लिए अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस 08 मार्च को मनाया जाता है।

2. **स्थितिः—** हमारा देश आज़ाद हो चुका है। लेकिन अभी तक महिलाओं को पूर्ण आज़ादी नहीं मिली है। अभी भी हमारे समाज में महिलाओं का शोषण होता है। जन्म से लेकर महिलाओं को कन्या भ्रूण हत्या, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार, मानसिक व शारीरिक शोषण जैसे जघन्य अपराधों का सामना करना पड़ रहा है। उनको उचित अधिकार व स्वतंत्रता नहीं मिल पा रही है। लेकिन कुछ क्षेत्रों में महिलाएं अपने वर्चस्व एवं अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रही है। अब लोगों की मानसिकता बदल रही है और कई क्षेत्रों में नारी ने पुरूषों को पीछे छोड़ दिया है।

हमारे देश में कई बड़े पदों पर महिलाओं की नियुक्ति हो रही है। राजनीति के क्षेत्र में भी महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर चल रही है। श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल हमारी राष्ट्रपति रह चुकी हैं। कई राज्यों में मुख्यमंत्री, राज्यपात व अन्य राजनीतिक पदों पर महिलाएं विराजमान हैं। लेकिन अभी भी हमें नारी के उत्थान के लिए और अधिक प्रयासों की ज़रूरत है क्योंकि पिछड़े क्षेत्रों एवं गावों में अभी भी नारी को प्रताड़ित किया जाता है।

3. **महिला सर्वेक्षण के आंकड़ेः—** यूनाइटेड रायटर्स फाउण्डेशनं जो कि महिलाओं के हितों के लिए कार्य करता है, के सर्वेक्षण में 19 देशों की महिलाओं की स्थिति (सामाजिक/आर्थिक/राजनैतिक) की सर्वेक्षण रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्ट में कनाडा , जापान, अमेरिका, ब्रिटेन, भारत, अफगानिस्तान, ईरान ईराक सउदी अरब जैसे देशों की महिलाओं की स्थिति बताई गई है। लेकिन इस सर्वेक्षण में पाकिस्तान तथा बंगलादेश को शामिल नहीं किया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार कनाडा की महिलाओं की स्थिति सबसे बेहतर है। वहां पर महिलाओं को वे सभी अधिकार प्राप्त हैं जो पुरूषों को हैं।

लेकिन रिपोर्ट में अमेरिका को छटा स्थान प्राप्त हुआ और भारत को अंतिम। सर्वेक्षण का आधार सामाजिक, अर्थिक, राजनैतिक व घरेलू हिंसा को रखा गया है।

हमारे देश में महिलाओं की स्थिति दयनीय है। देश का लिंगानुपात 933 प्रति 1000 पुरूष है। शिक्षा के क्षेत्र में केरल राज्य सबसे आगे है जबकि बिहार में शिक्षा का स्तर सबसे कम है। आये दिन हमारे देश में बलात्कार होते रहते हैं। निर्भया बलात्कार देश का चर्चित कांड रहा है। हमारे देश में सबसे ज़्यादा घरेलू हिंसा, बलात्कार व दहेज उत्पीड़न के केस हैं।

4. **नारी उत्थान के लिए किये जाने वाले प्रयासः—** आज़ादी के बाद से ही महिलाओं के उत्थान के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं। इसके लिए 1951 में महिला आयोग का गठन किया गया। कन्या भ्रूण हत्या निरोधक कानून बनाया गया है। शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए आंगनवाड़ी केन्द्र, साक्षरता अभियान, जीवन ज्योति आदि अभियान चलाये जा रहे हैं। गांवों में आशावर्करों को नियुक्त किया गया है। कोई भी अपराध होता है तो पुलिस तुरन्त कार्यवाही करती है। कई छात्रवृति योजनायें, रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार, आदि दिये जाते हैं। यदि शिक्षा का विकास होगा तो हमारी मानसिकता बदलेगी। महिलाओं को आरक्षण में छूट दी जा रही है। सरकारी क्षेत्रों में उनके लिए अलग से स्थान रखे गये हैं। मैट्रिक स्तर पर छात्रवृति प्रदान करते हैं। यही वजह है कि महिलायें हर क्षेत्र में परचंम लहरा रही है। खेलों में टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल (बेडमिन्टम) आदि ने विश्व में भारत देश को अलग पहचान दिलाई है। सानिया मिर्जा को इस साल का खेलों का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार राजीव गांधी खेल रत्न प्रदान किया गया है। इन सभी योजनाओं व पुरस्कारों की वजह से महिलाओं में आगे बढ़ने का उत्साह बढ़ता है। जन्म के समय बच्ची पैदा होने पर सरकार की तरफ से सहायता राशि दी जाती है। माँ को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराया जाता है।

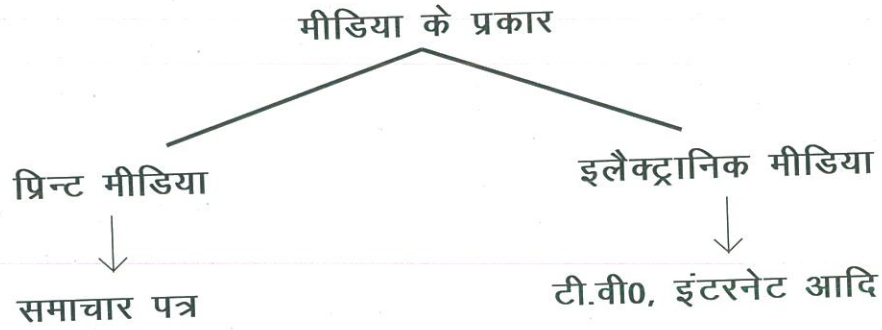
5. **उपसंहारः—** उपरोक्त विवरण से हमें महिलाओं के स्तर के बारे में पता चला है। कई क्षेत्रों में महिलाएं पिछड़ी हुई है, अत्याचारों की शिकार है तो कुछ क्षेत्रों में अपनी सफलता के झण्डे भी गाड़े हैं। लेकिन हमें ज़रूरत है नारी के सशक्तिकरण की अभी और प्रयासों की ज़रूरत है। अन्यथा नारी के बिना हमार समाज अधूरा है।



आज के दौर में मीडिया का योगदान

पंकज कुमार
लेखा परीक्षक

समाज के सशक्तिकरण में मीडिया का बहुत योगदान रहा है। मीडिया का अर्थ किसी जानकारी को एक माध्यम से दूसरे माध्यम तक पहुँचाना है। लोकतंत्र में मीडिया को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ भी कहा जाता है।



मीडिया को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ कहा जाता है। अर्थात् जितना शक्तिशाली मीडिया होगा, उतना ही देश शक्तिशाली होगा। इसलिये संविधान निर्माताओं ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 में वाक–स्वतंत्रता के अंतर्गत ही मीडिया को पूर्ण रूपेण स्वतंत्रता प्रदान की है। और लोगों को भी वाक–स्वतंत्रता दी गई है। ताकि राष्ट्र मज़बूत हो सके।

समाज में मीडिया की आवश्यकता, जागरूकता का माध्यम : जैसे–जैसे मानव ने उन्नति की वैसे–वैसे ही उसे जानकारी के आदान–प्रदान की आवश्यकता हाने लगी। जहां आदि काल में सूचना भेजने तथा प्राप्त करने का पूर्णतः प्रभाव था वहीं प्राचीन काल में सूचना को भेजने के लिए चरों या संदेश वाहकों का प्रयोग होने लगा।

18वी सदी के उत्तरार्द्ध में महान वैज्ञानिक ग्राहम बैल ने टेलीफोन का अविष्कार कर मीलों दूर सूचना को चन्द मिनटों में पहुचा दिया वहीं टी. वी. तथा इंटरनेट के अविष्कार के बाद सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना और भी आसान तथा तीव्र हो गया।

आधुनिक युग में सूचना ही ज्ञान है और इसे तीव्र गति से भेजना आवश्यक है। मीडिया के माध्यम से ही समाज के अधिकांश वर्ग तक सही जानकारी पहुंच पाती है तथा उसके उपयोग कर वह खुद का और अपने सगी संबंधियों का ख्याल रख सकता है। जैसे बर्ड फलू या स्वाइन फलू नामक बीमारी का प्रकोप फैला तो मीडिया के द्वारा ही लोगों ने रोकथाम के उपाय किये और खुद का बचाव किया।

जैसिका लाल मर्डर केस में मीडिया की भागीदारी द्वारा ही दोषियों को सज़ा मिली। ऐसे दर्जनों उदाहरण हैं जो मीडिया की समाज में उपयोगिता को साबित करते हैं।

लेकिन जहां मीडिया ने समाज में जागरूकता लाकर समाज को नई ऊचाईयां प्रदान की वहीं मीडिया ने बुराईयों को भी बढ़ावा दिया है। आज आतंकवाद ने सोशल मीडिया, फेसबुक आदि का प्रयोग कर जहां उसने (आतंकवाद) अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाया वहीं लोगों को डराकर उनसे पैसे आदि की मांग भी की है। जहां मीडिया ने लोगों के बीच की दूरी को कम किया है वहीं उसने लोगों में ईर्ष्या व द्वेष की भावना को भी बढ़ाया है। जहां मीडिया ने जैसिका मर्डर केस, आरूषि मर्डर केस जैसे कई ज़िम्मेवारी भरे काम किये हैं वहीं वह गैर ज़िम्मेदारी भरा रवैया अपनाकर किसी भी व्यक्ति को रात ही रात में नापक या खलनायक बना देता है।

आज मीडिया अपनी ज़िम्मेदारी भूलकर गैर ज़िम्मेदारी रवैया अपना रहा है। वह समाज और देश के प्रति ज़िम्मेदारियों से विमुख हो गया है। तथा न्यूज़ चैनलों पर रोज़ाना गैर ज़रूरी चीज़ों को प्रदर्शित किया जाता है। जैसे किसी मॉडल के रैंप पर फिसलने की खबर को कहां तक प्रचार किया जाये?

आज मीडिया समाज तथा देश का आईना है उसे समाज तथा देश के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को समझकर समाज हित तथा देश हित में कार्य करना चाहिए। मीडिया आज समाज की आवश्यकता के साथ–साथ जागरूकता का माध्यम भी है।

अतः मीडिया को अपनी ज़िम्मेदारी का पूर्ण रवैया अपनाते हुए समाज हित तथा देश हित में कार्य करना चाहिए और लागों तक सही व उचित जानकारी पहुँचाना चाहिए ताकि लोगों को सत्य का पता चल सकें ।



टाईम पास

रवि कुमार शर्मा
लेखा अधिकारी

टाईम पास, जी हाँ टाईम पास' यह शब्द कोई ऐसा शब्द नहीं जिससे हर व्यक्ति भली भांति परिचित ना हो, क्योंकि यह हर व्यक्ति का जाना पहचाना शब्द है ना केवल जाना पहचाना बल्कि हम सभी अक्सर इस शब्द का इस्तेमाल भी करते है, संभवत! तब जब हम किसी के संबंध/सम्पर्क में आते है और अगर किसी ने स्वयं इस शब्द का प्रयोग नहीं किया हो तो अवश्य ही कभी ना कभी किसी दुसरे से टाईम पास कहते सुना होगा।

आम तौर पर आप ने देखा होगा कि बस स्टैड, रेलवे स्टेशन आदि जगहो पर जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए वहां पहुंचते है तो अक्सर उन्हें टाईम पास जैसे शब्द भी सुनने को मिल जाते है अक्सर इस शब्द का प्रयोग चीज बेचने वाले, चाय बेचने वाले, पत्रिकायें बेचने वाले या अन्य समान बेचने वाले इस शब्द का प्रयोग करते है टाईम पास इसकी बजाए कि यह ले लो या वो ले लो इत्यादि तो टाईम पास शब्द का इस्तेमाल कर यात्रियों का ध्यान अपनी ओर आकिर्षत करते है। शायद उनका मानना है कि अपना सफर तो तय करेंगे ही लेकिन साथ ही साथ उनका टाईम पास भी अच्छा जाएगा।

यहां तक कि कभी–2 लोग जब एक दुसरे से मिलते है और खास कर तब जब उनको किसी ना किसी चीज से मायूसी हो कोई चिंता परेशान कर रही हो तथा जीवन में उदासी का अनुभव हो रहा हो तो अक्सर मैंने देखा है कि कभी किसी से पुछे कि भईया कैसा चल रहा है तो उत्तर मिलता है बस टाईम पास हो रहा है। यानि की ऐसे लगता है कि शायद जिन्दगी जीना सिर्फ और सिर्फ एक टाईम पास है और इसका कोई और दुसरा मतलब नहीं।

और कभी – कभी तो हमारा एक स्वभाव सा ही बन जाता है तथा इस शब्द का इस्तेमाल जाने अनजाने में करते रहते है आप जानते है कि हर व्यक्ति के जीने का ढंग अलग–2 है। उसकी प्राथमिकताएं भिन्न–2 है। उसकी रूचि उसके शौक एक दुसरे मेल नहीं खाते। या युँ कह लो कि हर दुसरे का जीने का अंदाज अलग–2 है और उसको जिस चीज या वस्तु से ज्यादा लगाव है और उसको कौन सी चीज ज्यादा प्रमावित करती है सब में साथ अलग–2 है।

कुछ ऐसी ही परिस्थितियाँ मुझे देखने को मिली जब मैं अपनी पत्नी के साथ पंजाब जा रहा था तथा हमारी बस दोपहर के भोजन हेतु सुजानपुर के एक ढाबे पर रूकी। यह घटना 8.11.2013 की है और तब से मैं सोच रहा था कि इस घटना को अपनी पत्रिका तवी तंरग के माध्यम से साझा करूँ।

जैसा कि आप सब जानते है कि हम प्रजातंत्र देश में रहते है और इस प्रजातंत्र की मजबुती प्रदान करने के लिए मिडिया की बहुत बड़ी भुमिका रहती है हमारे देश में मिडिया को चौथे संतभ के रूप देखा जाता है जिसमें दोनों तरह के मिडिया शामिल है जैसे इलैक्टोनिक एव प्रिन्ट मिडिया और मेरा यहा पर बल प्रिन्ट मिडिया पर है। हम जानते है कि मिडिया (अखबार) हमें सूचना प्रदान करते है जिनमें हमारे आस–पास अलग–2 राज्यों, देश में घटित घटनाएं तथा दुनिया भर की खबरे हम तक पहुंचाते है तथा हमें अपने ज्ञान को अपग्रेड रखने में हमारी सहायता करते है। सरकार द्वारा जनहित में चलाइ जा रहीं योजनाओं/परियोजनाओं का जन–जन तक पहुचाने का कार्य भी करते है। सुबह–2 जब घर में अखबार वाला अखबार डाला कर जाता है तो घर बैठे–2 ही देश–विदेश की गतिविधियों की जानकरी हम तक पहुँच जाती है तथा इसलिए अपने देखा होगा कि अक्सर लोग खास कर सरकारी कार्यालयों में कार्य करने वाले कर्मचारी अपनी दिनचर्या सुबह अखबार / पेपर पढ़ने के साथ ही शुरू करते है। मिडिया का पब्लिक आपेनियन बनाने में बहुत ही महत्वपूर्ण रोल रहता है और जब मतदान के समय या देश विदेश में कोई बड़ी घटना हो जाने पर लोग अखबार को पढ़कर ही अपना मत तैयार करते है समाचार पत्र के माध्यम से ही वे अपने आप को पुरी दुनिया के साथ जुड़ा हुआ महसुस करते है।

पेपर/ पत्र में अलग–2 संस्करण निकाले जाते है तथा यह ध्यान रखा जाता है कि हर वर्ग के लोगों के लिए कुछ लिखा होना चाहिए बुढ़े,बच्चे, नौजवान तथा महिलाओं के पढ़ने लायक सामग्री को बडे ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया जाता है खेलों में शौक रखने वालो के लिए स्पोर्टज के पेज प्रिन्ट किये जाते है। खबरे पढ़नें वाले खबरे पढ़ते है तथा बुद्धिजीवी

आदि लोग सम्पादकीय / लेख आदि पढ़ने में रूचि लेते है और अपने ज्ञान में वृद्धि करते है।

क्योंकि पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य ही जन मानस का हित है तथा सच्चाई को लोगों तक पहुंचाना है वो अलग बात है कि मिडिया का प्रयोग कुछ लोग अपने निजी स्वार्थो की पूर्ति हेतु भी करते है। इसमें हम कभी पेड़ न्युज आदि की खबरों के बारे में भी पढ़ते हैं।

और न्युज पेपर/ मिडिया की इतनी बडी भुमिका होने के बाद क्या हम इसे केवल टाईम पास का माध्यम मान सकते है। सच मानो तो न्युज पेपर/ हर किसी को जिन्दगी में एक अहम भुमिका निभाते है। उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते है क्योंकि समाचार पत्र शिक्षा का एक बहुत बड़ा माध्यम है लोगों को जिन्दगी को बदलने और समग्र विकास के लिए तथा जिन लोगों ने प्रिन्ट मिडिया के महत्व को समझा है और इसको शिक्षा का एक बड़ा स्रोत माना है और इसके द्वारा लाए गये बदलाव को महसूस किया है ऐसे लोगों के लिए मेरा मानना है समाचार पत्र कभी–भी केवल टाईम पास नहीं हो सकता।

दिनांक 8.11.13 को जब हमारी बस सुजानपुर एक ढाबे पर यात्रियों को खाना खिलाने के लिए रूकी तो एक अधेड उम्र का आदमी हाथो में न्यूज पेपर की गठरी लेकर बस के अंदर दाखिल हुआ और अन्दर आते ही टाईम पास की अवाज लगाकर लोगों को न्यूज पेपर लेने के लिए उनका ध्यान आकर्षित करने लगा। वो शायद अपनी जगह यही है क्योंकि उसकी समझ के मुताबिक तो यात्रियों को टाईम पास करने के लिए ही न्युज पेपर चाहिए क्योकि ज्यादतर लोग तो ऐसा ही सोचते है लेकिन अखबार वाले के द्वारा टाईम पास का शब्द सुनते ही मुझ को कुछ सही नहीं लगा क्योंकि मैने कभी भी समाचार पत्र को केवल टाईम पास का माध्यम नहीं अपितु अपनी लगातार चलने वाली शिक्षा का हिस्सा माना है तथा मैने उस समय पास में बैठी पत्नी को कहा देखो न्युज पेपर बेचने वाला न्युज पेपर को टाईम पास कह रहा है कौन सही था, या दोनों ही सही। अपनी समझ के हिसाब से शायद पाठक अच्छी तरह से जानते हैं। मेरा यह छोटा सा प्रयास जिसमें मैंने अपने जीवन की एक छोटी सी घटना को एक कहानी का रूप देकर केवल मात्र टाईम पास किया है या मेरे लिखने के प्रयास में थोडा और सुधार हुआ है। मैं इसे पाठकों के ऊपर छोड़ता हुँ।



उजालों से अब डर लगने लगा है

दर्शना भारती
लेखा अधिकारी

1. उजालों से अब डर लगने लगा है
जब से चांद राह से गुज़रने लगा है

हर फूल है महका हुआ हर कली है अलसाई भंवरा बना है
दुल्हा किसने छेड़ी है धुन–शहनाई।

डाली–डाली पत्ता–पत्ता अब संवरने लगा है जब से चांद
राह से गुज़रने लगा है।

2. खुदा की कारीगरी पर हम तो नाज़ करने लगे सलामत रहे
हंसे मुस्कराये यही फरियाद करने लगे।

खुदा खैर करे दिल हाथों से अब फिसलने लगा है जब से
चांद राह से गुज़रने लगा है।

3. क्यों बिन पिये आज हम बहकने लगे क्यों साकी के हाथों में
जाम थिरकने लगे क्या अदा है क्या नशा है जो खाली
पैमाना भी अब छलकने लगा है जब से चांद राह से गुज़रने
लगा है।

4. कयों रातें बेनूर होने लगी, क्यों शाम भी मगरूर होने लगी
संग जियेंगे मरेंगे खाई थी कसमें, क्यों परवाने से अब दूर
होने लगी परवाना जब से शमां को निगलने लगा है

उजालों से अब डर लगने लगा है जब से चांद राह से
गुज़रने लगा है।

5. छत से देखते थे जिसे छुप के–छुपा के ज़माने की कातिल
नज़रों से बयां के पर अब वो सरे–आम पनघट पे विचरने
लगा है

उजालों से अब डर लगने लगा है
जब से चांद राह से गुज़रने लगा है।

आपके पत्र

छाया चित्र मनमोहक है

पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनमोहक है। इस अंक में समाविष्ट रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। विशेषकर श्री संजीव वर्मा का पुरूष प्रधान नारी परेशान, रीता खर का पवित्र जीने का संकल्प, शिबन कुमार रैना का अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं अंतराष्ट्रीय भी बनाता है विचारप्रधान, ज्ञानवर्धक एवं रोचक लेख हैं। यही है जिन्दगी, अभिलाषा, बेटियाँ, माँ हिन्दी हिन्दोस्तां है तू, मैं गवाह हूँ इतिहास बदलने का कविताएँ प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन व संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

ग्वालियर, म.प्र. लेखा अधिकारी / राजभाषा

रोचक एवं ज्ञान वर्धक

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ, तथा कहानियाँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री कुंदन कुमार की कविता "मैं साथ हूँ सदा तुम्हारे", श्री बलवंत सिंह का लेख "हिन्दी हो सकती है हमारी राजभाषा", श्रीमती मीना धर की कविता "अभिलाषा", श्रीमती कमलेश कुमरी की कविता "बेटियाँ, श्री लाल चंद की कविता "लूट", श्री पुरूषोत कुमार शर्मा का लेख "अंग्रेजी में शिक्षा कहां तक सार्थक? श्री राजीव कुमार की कविता "हिंदी अपने हुए बेगाने", श्रीमती दिव्या गुप्ता का लेख "सर्वशिक्षा अभियान", व.उप. महालेखाकार श्रीमती पुष्पा जंरगाल की कविता "छोड़ बनावट की दुनिया", श्रीमती सुप्यार की कविता "आँसू–मेरी कीमत", श्री शिबन कुमार रैना, का लेख "अनुवाद हमें... बनाता है", श्री संजीव वर्मा का लेख "पुरूष प्रधान नारी परेशान", तथा "ऊपर वाले की देन जनसंख्या", श्री दर्शना देवी की कविता "डॉलर के मुकाबले रूपया कितना गिर गया", श्रीमती रीता खेर का लेख "पवित्र जीवन जीने का संकल्प", तथा श्रीमती वीणा शर्मा की कविता "और भारत मुस्काएगा" आदि सभी रचनाएं सुंदर एवं ज्ञान वर्धक है।

रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

लेखा परीक्षा अनिल त्रिपाठी
नागपुर, महाराष्ट्र हिन्दी अधिकारी

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मौलिक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। विशेषकर पत्रिका में कमलेश कुमारी द्वारा लिखी गयी कविता 'बेटियाँ, पुरूषोत्तम कुमार शर्मा द्वारा लिखा गया लेख 'अंग्रजी में शिक्षा कहाँ तक साथर्क', संजीवन वर्मा द्वारा लिखा गया लेख 'पुरूष प्रधान नारी परेशान' और रीता खर द्वारा लिखा गया लेख 'पवित्र जीवन जीने का संकल्प' सर्वाधिक रोचक एवं प्रेरणादायी है। पत्रिका में विभिन्न लेख व कविताएं बहुत अच्छी है। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत लुभावना है।

पत्रिका के अविराम प्रगति हेतु शुभकामनाएं।

मुबई शेखा मावलकंर
महाराष्ट्र स. ले. अधि. / राजभाषा

पठनीय एवं ज्ञानवर्धक

पत्रिका में समाहित समस्त सामग्री संगृहणीय, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। रचनाओं में जो रचनाएं विशेष प्रिय लगीं, वे हैं – "राम राज्य", "मेरे दोस्त की शादी", "मैं गवाह हूँ इतिहास बदलने का", "पवित्र जीवन जीने का संकल्प" इत्यादि। पत्रिका के इस अंक के सफल सम्पादन हेतु बधाई एवं भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

उत्तराखण्ड संजय राज़दान
स. ले. अधि. / राजभाषा

रचनाएँ अत्यन सराहनीय है।

आवरण पृष्ठ अत्यन्त मनोरम है पत्रिका में छपी सभी रचनाएँ रोचक एवं जानकारी वर्धक है।

आपके पत्र

खास करके सुप्यार कुमारी की कविता आँसू मेरी–कीमत कमलेश कुमारी की मैं क्या हूँ, संजीव वर्मा का लेख पुरूषप्रधान नारी परेशान, वीणा शर्मा की कविता और भारत मुस्काएगा, पुष्पा टिक्कू की नानी कह एक कहानी, मीना धर की अभिलाषा तथा कृष्ण कुमार की कविता राम तुमने अच्छा किया आदि रचनाएँ अत्यंत सराहनीय हैं।

संपादक मंडल को बधाई के साथ पत्रिका की उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

भुवनेश्वर, ओडिसा — रबीन्द्र चान्द, हिन्दी अधिकारी

सुपाठ्य एवं प्रेरणात्मक

पत्रिक में निहित सभी रचनाएँ सुपाठ्य और ज्ञानवर्धक है सारी रचनाएँ सराहनीय एवं प्ररेणात्मक है।

'पुरूष प्रधान नारी परेशान', 'सर्वशिक्षा अभियान', आदि लेख अच्छे लगे। 'मैं क्या हूँ', 'छोड़ बनावट की दुनिया कविताएँ अच्छी हैं।

पत्रिका की उज्जवल भविष्य की आशा करते हैं।

हैदरावाद, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना — कल्पना कुमारी, लेखा अधिकारी, रा.भा. अनुभाग

रचनात्मक से परिपूर्ण

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु प्रकाशित पत्रिका ''तवी तरंग'' का 17वां अंक प्राप्त हुआ। रचनात्मक से परिपूर्ण पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ रूचिकर एवं सराहनीय है। आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद

कर्नाटक — सबीहा बानू आर, व.ले.अधि./हिंदी कक्ष

मुद्रण अत्यंत आकर्षक

पत्रिका में समाविष्ट सम्पूर्ण रचना से राजभाषा हिन्दी जहाँ एक ओर विकास की दिशा में अग्रसर होती हुई प्रतीत हो रही है, वहीं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के योगदान से पाठकों को हिन्दी के साहित्य सागर में डुबकी लगाने एवं प्रत्येक रचना का रसास्वादन करने के अवसर भी प्राप्त हो रहा है। श्री शिबन कुमार रैना जी की 'अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं, अंतराष्ट्रीय भी बनाता है, श्री कुन्दन कुमार जी की 'मैं साथ हूँ सदा तुम्हारे' एवं श्रीमती पुष्पा जंरगाल जी की 'छोड़ बनावट की दुनिया विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ, पृष्ठ सज्जा एवं मुद्रण अत्यंत आकर्षक एवं सुरूचिपूर्ण है। पत्रिका के उत्तम सम्पादन हेतु संपादक मण्डल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

वैज्ञानिक विभाग, कोलकता — क.सरकार, व. ले. प. अधि.

श्रेष्ठ संकलन

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अति रोचक पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। सम्पादन और कलेवर की दृष्टि से पत्रिका सुरूचिपूर्ण एवं सुंदर बन गई है। श्री पुरूषोत्तम कुमार शर्मा की लेख 'अंग्रजी में शिक्षा कहाँ तक सार्थक', श्रीमती कमलेश कुमारी की कविता 'मैं क्या हूँ', तथा श्री अमित कुमार की कविता 'मैं गवाह हूँ' इतिहास बदलने का विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पत्रिका की श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादन–मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

गुवाहाटी, असम — व.उपमहालेखाकार (प्रशा.)

ज्ञानर्वधक एवं मनोरंजक

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। पत्रिका में समाहित रचनाओं को व्यवस्थित तरीके से पेश किया गया है। एवं इसक कलेवर, मुद्रण एवं साज–सज्जा भी अत्यधिक प्रशंसनीय है।

आपके पत्र

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में विशेषकर श्री राजीव कुमार द्वारा रचित कविता ''हिंदी अपने हुए बेगाने'', श्रीमती तारो देवी द्वारा रचित ''माँ'', कमलेश कुमारी की ''मैं क्या हूँ'', श्री शिवन कुमार रैना द्वारा रचित ''अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं, अंतराष्ट्रीय भी बनाता है'' एवं श्री संजीव की ''पुरूष प्रधान नारी पेरशान'' आदि रचनाएँ अत्याधिक मनमोहक, विचारात्मक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को पत्रिका के श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए बधाई और पत्रिका के बहुमुखी विकास एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

तिरूवतंपुरम ,केरल — रोहिणी
हिन्दी अधिकारी

हृदय से धन्यवाद

पत्रिका में समाहित स्तरीय रचनाओं के लिए चयनकारों को बधाई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ सरस तथा पाठकों का मन सहज ही मोहने वाली हैं। विशेषकर श्री राजीव कुमार की 'हिंदी अपने हुए बेगाने', श्री शिबन कुमार रैना की 'अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं अंतराष्ट्रीय भी बनाता है' व श्री संजीव वर्मा की 'ऊपर वाले की देन–जनसंख्या' अत्यंत सराहनीय रचनाएँ हैं।

रचनाकारों, संपादकमण्डल व पत्रिका परिवार को राजभाषा हिंदी के प्रति इस अतुलनीय निष्ठा के लिए आभार सहित हृदय से धन्यवाद तथा पत्रिका को दीर्घायु प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना के साथ पत्रिका परिवार के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

राजकोट, गुजरात — एम.जे.चंदे
व. ले. अधि.

मुखपृष्ठ संकल्पना प्रशंसनीय

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कहानियाँ एवं कविताएँ, पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु उपयोग में लाई गई सामग्री उत्कृष्ट है। श्रीमती मीना धर द्वारा रचित कविता 'फिर से बसंत लाओ', श्री ओम प्रकाश चौधरी द्वारा रचित कविता, 'हे हिन्दी हिन्दोस्तां है तू' और श्रीमती वीणा शर्मा द्वारा रचित कविता 'और भारत मुस्काएगा' विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका का आवरण चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मुखपृष्ठ संकल्पना प्रशंसनीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

ले. व हक–II — श्री सतीश दुबे
नागपुर, महाराष्ट्र — हिन्दी अधिकारी

सुंदर एवं पठनीय

आपके कार्यालय की पत्रिका 'तवी तरंग' का 17वां अंक हमें प्राप्त हुआ है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनायें सुन्दर एवं पठनीय हैं। पुस्तक की साज सज्जा भी बहुत संन्दर है।

श्री शिवन कुमार रैना (अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तराष्ट्रीय भी बनाता है), श्रीमती मीना धर (अभिलाषा), श्रीमती कमलेश कुमारी (बेटियां), सुश्री रीता खर (पवित्र जीवन जीने का संकल्प) की रचनायें उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिये बहुत–बहुत शुभकामनाएँ।

डाक व दूरसंचार, दिल्ली — व. ले.प. अधि.

मौलिक एवं पठनीय

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं, रोचक, मौलिक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। 'आंसु मेरी कीमत' (श्रीमती सुप्यार कुमारी) और भारत मुस्काएगा (श्रीमती वीणा शर्मा) तथा पवित्र जीवन जीने का संकल्प (श्री मती रीता खर) रचनाएं विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। पत्रिका की सजा–सज्जा भी उत्तम है।

तवी तरंग पत्रिका की उत्तरोत्त प्रगति के लिए सुगंधा परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

लेखा परीक्षा, — व. ले. प. अधि.
चण्डीगढ़, पंजाब

कार्यालय महालेखाकार लेखा व. हकदारी, लेखा परीक्षा, जम्मू व कश्मीर एवं क्षे. प्र. संस्थान, जम्मू

प्रतियोगिता परिणाम

क्रं.सं.	प्रतियोगिता का नाम	आयोजन की तिथि	परिणाम
1.	निबंध लेखन	14.09.2016	प्रथमः श्री कुन्दन कुमार, व.ले.प. द्वितीयः श्री जय कुमार, व.ले.प. तृतीयः श्री मानवेन्द्र सिंह, ले.प. सांत्वनाः श्रीमती सुनीता भान, व.ले.
2.	श्रृत–लेखन / शब्द ज्ञान	16.09.2016	प्रथमः श्री धीरज कुमार, व.ले.प. द्वितीयः श्री कुन्दन कुमार, व.ले.प. तृतीयः श्री रजनीश कुमार, व.ले.प. सांत्वनाः कु. मीनाक्षी रानी, लेखाकर
3.	प्रश्नोत्तरी	19.09.2016	प्रथमः श्री जय कुमार, व.ले.प. द्वितीयः श्री रजनीश कुमार, व.ले.प. तृतीयः श्री पितांबर साहु, व.ले.प. सांत्वनाः श्री धीरज कुमार, व.ले.प.
4.	भाषण प्रतियोगिता	23.09.2016	प्रथमः श्री रवि कुमार शर्मा ले.प. द्वितीयः श्री मानवेन्द्र सिंह, ले.प. तृतीयः श्रीमती पुष्पा टिक्कु, पर्यवेक्षक सांत्वनाः श्रीमती सुनीता भान, व.ले.
5.	कविता पाठ	26.09.2016	प्रथमः श्रीमती वीणा शर्मा, स.ले.प. द्वितीयः श्रीमती इंदिरा मट्टु, व.ले. तृतीयः श्री रवि कुमार, स.ले.प.अ. सांत्वनाः श्रीमती सुनीता भान, व.ले.

सेवा निवृति

01.04.15 से 31.12.2016

संकलन : सुनील कुमार
क.हि.अनु.

कार्यालय के निम्नांकित साथियों को उनके समक्ष दर्शाए गए दिनांक से सेवा निवृत्त होने पर 'तवी तरंग' परिवार की ओर से उन्हें उनके स्वस्थ जीवन एवं दीघर्यु होने की शुभ कामनाएँ।

क्रं.	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृति तिथि
1	मोहन लाल	पर्यवेक्षक	30.04.2015
2	पीर मोहम्मद अमीन	व.लेखाकार	30.04.2015
3	पी.के. भटट	व. लेखाकार	31.05.2015
4	पुरूषोत्तम कुमार शर्मा	स. लेखा अधिकारी	30.09.2015
5	विजय कुमार पण्डिता	व़. लेखा अधिकारी	31.10.2015
6	वी.के. सूरी	व. लेखा अधिकारी	31.10.2015
7	यशपाल	स. लेखा अधिकारी	31.10.2015
15.	श्री एस. के लुथरा	वरि. ले. प.अधिकारी	31.10.2015
16.	श्री कमभ कुमार	स.ले.प.अधिकारी	31.10.2015
17.	श्री कृष्ण लाल चोपड़ा	रिकार्ड कीपर	31.12.2015
8	गुलाम नबी धोबी	व.लेखा अधिकारी	31.01.2016
9	वीणा वातल	पर्यवेक्षक	31.01.2016
6.	श्री ए. के गंजू	पर्यवेक्षक	31.01.2016
7.	श्रीमती ज्योत्सना कौल	पर्यवेक्षक	31.01.2016
1.	श्री वी. के वांगनु	वरि.ले.प.अ.	29.02.2016
10	सुधीर शर्मा	व. लेखा अधिकारी	31.03.2016
11	अरूण ठाकुर	व. लेखाकार	31.03.2016
12	अजीत कुमार मंगोत्रा	व. लेखाकार	31.03.2016
8.	श्री नंद लाल रैना	वरि.ले.प.अ.	31.03.2016
13	रजनी वल्ली	पर्यवेक्षक	30.04.2016
14	सरला टुकरा	व. लेखाकार	30.04.2016
15	आशा रानी	व. लेखाकार	30.04.2016
16	गुलाम हसन शेख	व. लेखाकार	30.04.2016
9.	श्रीमती गुडडी बली	पर्यवेक्षक	30.04.2016
10.	श्री पी. के खेर	वरि ले.प.अधिकारी	31.05.2016
11.	श्री विजय कुमार कौल	पर्यवेक्षक	31.05.2016
17	विपिन जाडू	स. लेखा अधिकारी	31.05.2016
18	भारत भूषण भट्ट	व. लेखा अधिकारी	30.06.2016
19	इन्दर भूषण सफाया	लेखा अधिकारी	30.06.2016
20	वीणा माला	व. लेखाकार	30.06.2016
21	पुश्पा कौल	व. लेखाकार	30.06.2016
22	बिमला देवी	व. लेखाकार	31.07.2016
12.	श्री एस.एस. कोतवाल	वरि. ले.प.अधिकारी	31.08.2016
23	रोशनलाल भटट	व. लेखा अधिकारी	31.08.2016
24	नरेन्द्र मोहन कौल	व. लेखा अधिकारी	31.08.2016
25	मोहम्मद अकबर मीर	व. लेखा अधिकारी	30.09.2016
26	दर्शना देवी	व. लेखा अधिकारी	30.09.2016
27	पूरण चंद	लेखा अधिकारी	30.09.2016
28	तीरथ राम	व. लेखाकार	30.09.2016
29	प्रेम किशोर	लेखा अधिकारी	31.10.2016
30	निम्मी कौल	व. लेखाकार	31.10.2016

13.	श्री अशोक कुमार चड्ढा	पर्यवेक्षक	31.10.2016
14.	श्रीमती बिमला देवी	व.ले.प.	31.10.2016
31	कमला देवी	व.लेखाकार	31.10.2016
32	सुरिन्दर कौल	व. लेखा अधिकारी	30.11.2016
33	सुषमा रैना	व. लेखाकार	30.11.2016
34	सुच्चा राम	व. लेखाकार	31.12.2016
35	परमानंद	एम.टी.एस.	31.12.2016

देहावसान

जहाँ जन्म एक सत्य है वहां मृत्यु भी एक अटल सच्चाई है। 1.04.15 से 31.03.2016 तक देहावसान हुए अधिकारी/कर्मचारी।

क्रं.	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	देहावसान तिथि
1.	नैन्सी कुमारी खर	पर्यवेक्षक	29.04.2015
2.	सुदेश कुमार	स.ले.प.अधि	13.01.2016
3.	नुसरत	व. लेखाकार	18.02.2016
4.	सुप्यार कुमारी	लेखाकार	27.09.2016

लेखा परीक्षा प्रतिवेदन के पन्नों से.....

अनुवाद फूल सिंह
क. हि. अनु.

लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत सबसिडी प्राप्त खाद्य अनाजों तथा कैरोसिन तेल की आपूर्ति।

गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों परिवारों की शिनाख्त प्रणाली बहुत दोषपूर्ण थी जिसमें योग्य परिवारों को लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (टी.पी.डी.एस.) के लाभों से वचित रहना पड़ा तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एन.एफ. एस.ए.) 2013 को लागू नहीं किया गया।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत सप्लाई किए गए खाद्यन्नों की गुणवत्ता जांच करने हेतु विभाग के पास कोई जांच प्रयोगशाला और प्रशिक्षित व्यक्ति उपलब्ध नहीं थे। खरीदी गई चीनी की गुणवत्ता की उचित जांच सुनिश्चित नहीं की गई थी।

मिड–डे–मिल योजना के अंतर्गत स्कूली बच्चों को प्रदान किए गये भोजन के नमूने की गुणवत्ता, सुरक्षा, साफ–सफाई की जांच करने हेतु विभाग द्वारा सी एस आई आर/ राष्ट्रीय प्रयोगशाला प्रमाणन बोर्ड, मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं को नियुक्त नहीं किया गया।

सम्पदा विभाग की कार्यप्रणाली

सरकारी व्यक्तियों के आवास से संबंधित आवश्यकताओं को पूरा करने तथा निजि होटलों/ निजि मकानों के भारी भरकम खर्च को कम करने की दिशा में विभाग ने सरकारी कालोनियों के विकास के परिप्रेक्ष्य में कोई दीर्घावधि योजना तैयार नहीं की।

प्राधिकरण की स्थापना होने के बाद भी प्राधिकरण का लेखा, राज्य विधानपालिका के समक्ष नहीं रखा गया। अड्डा फीस/पार्किंग फीस तथा किराया/ भवन अनुज्ञा शुल्क की लघु लेवी और दंड की लेवी एकत्रित न करने के कारण प्राधिकरण को रूपये 1.41 करोड के राजस्व का घाटा हुआ।

जम्मू विकास प्राधिकरण

प्राधिकरण की स्थापना होने के बाद भी प्राधिकरण का लेखा राज्य विधानपालिका के समक्ष नहीं रखा गया। अड्डा फीस/पार्किंग फीस तथा किराया/भवन अनुज्ञा शुल्क की लघु लेवी एकत्रित न करने के कारण प्राधिकरण को रूपये 1.41 करोड के राजस्व का घाटा हुआ।

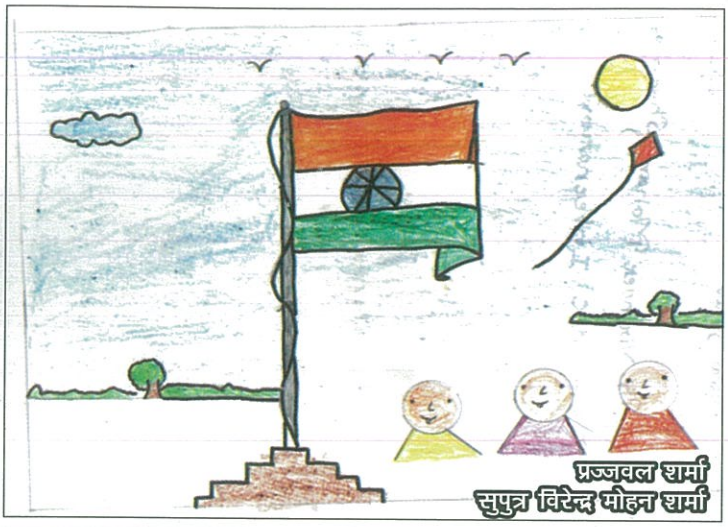
जम्मू व कश्मीर सीमेंट लिमिटेड की कार्यप्रणाली

सीमेंट प्लांट में 58.278 मीट्रिक टन कोयले तथा 658.04 लाख **kwh** बिजली की अधिक खपत से कंपनी पर रूपये 80.17 करोड का अतिरिक्त बोझ पड़ा।

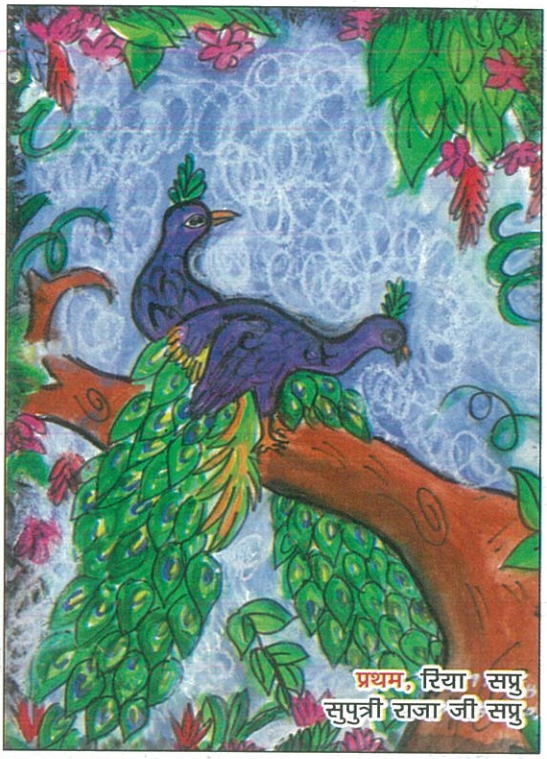
लेवी तथा बिजली डयूॅटी एवं फीस इक्टठा करने का निरीक्षण लेखा परीक्षा।

लेवी तथा बिजली डयूॅटी एवं फीस इक्टठा करने की निरीक्षण लेखा परीक्षा से पता चला कि विभाग ने लेखा परीक्षा पार्टी द्वारा बताई गई कमियों को दूर करने की दिशा में कोई उचित उपाय नहीं किए। बिजली डयूॅटी वसूली की प्रगति उचित नहीं थी जैसा कि वसुली योग्य राशि के रूप में रू. 269.94 करोड बताए गए थे, अभी भी रू. 265.50 करोड की वसूली करनी लंबित है।

बच्चों का कोना



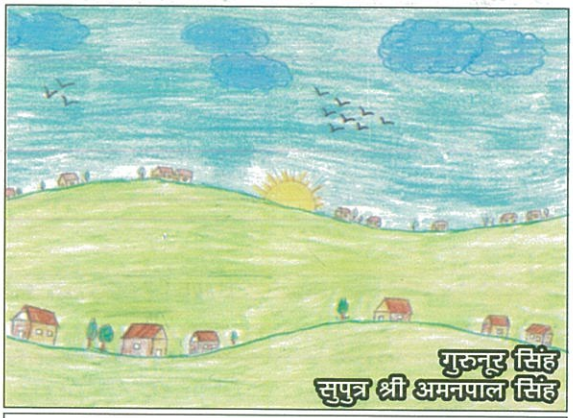
प्रज्जवल शर्मा
सुपुत्र विरेन्द मोहन शर्मा



प्रथम, रिया, सप्रु
सुपुत्री राजा जी सप्रु



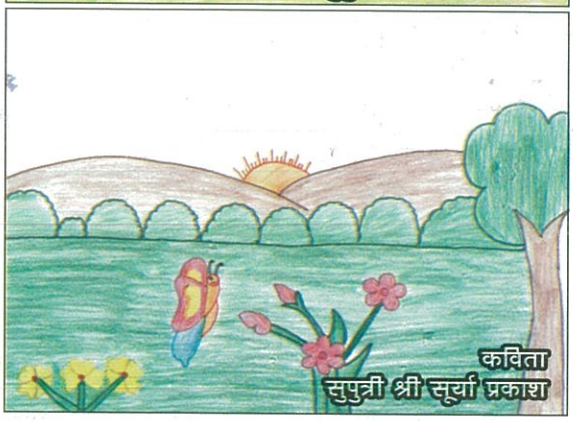
अंकिता खजुरिया
सुपुत्री श्री शिव खजुरिया



गुरुनूर सिंह
सुपुत्र श्री अमनपाल सिंह

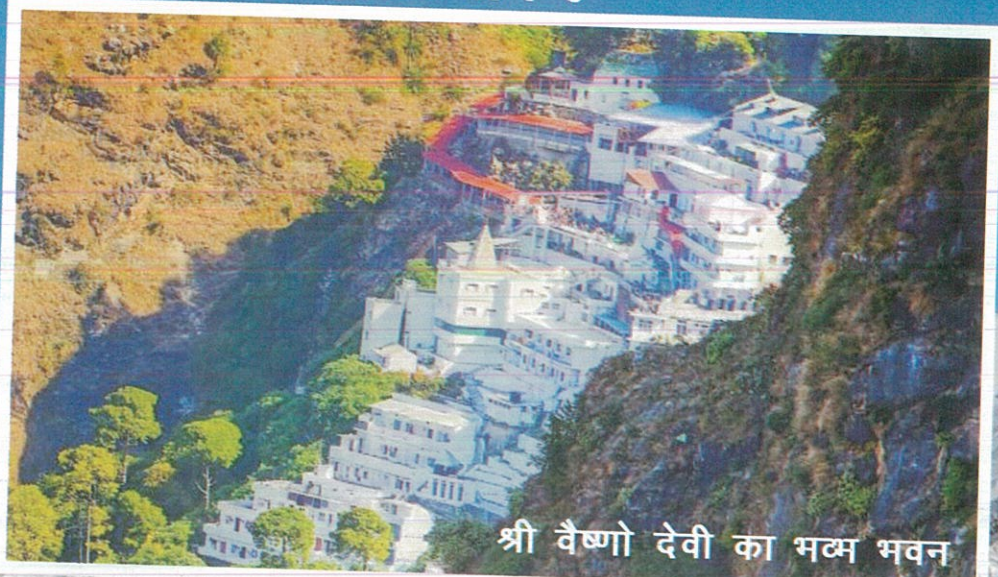


अदिति
सुपुत्री श्री जसवीर सिंह



कविता
सुपुत्री श्री सूर्या प्रकाश

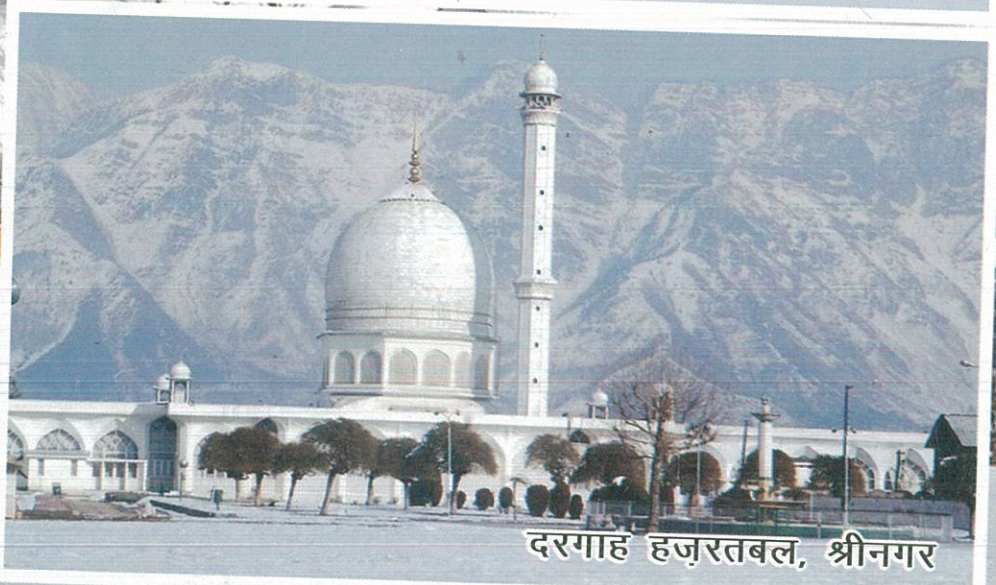
तवी तरंग



श्री वैष्णो देवी का भव्य भवन



शान्ति स्तूप लेह



दरगाह हज़रतबल, श्रीनगर

जम्मू व श्रीनगर कार्यालय का संयुक्त अंक

Designed & Printed by:
JANDIYAL
Printing Press
Ph.: 0191-2553140